Class:	**B.A. 3rd year**	**Subject:**	**Music (Vocal/Instrumental)**
Course Type:	**DSE 2B**	**Course Code:**	**MUSA305TH**
Course Name:	**Theory**	**Paper Type:**	**Theory Paper VI**

MUSIC
(Theory)

Lesson : 1 - 9

Dr.Nirmal Singh

Centre for Distance & Online Education (CDOE)
Himachal Pradesh University
Gyan Path, Summer Hill, Shimla-171005

विषय सूची

क्रम	इकाई	विषय सूची	पृ. सं
1		विषय सूची	2
2		प्राक्कथन	3
3		पाठ्यक्रम	4
4	इकाई 1	टप्पा और वर्ण	5-14
5	इकाई 2	काकु और ठुमरी	15-26
6	इकाई 3	एकताल और चौताल	27-36
7	इकाई 4	दीपचंदी और धमार ताल	37-46
8	इकाई 5	त्रिवट, दादरा चतुरंग और निबद्ध गान और अनिबद्ध गान	47-57
9	इकाई 6	थाट और स्थाय	58-68
10	इकाई 7	घराना	69-86
11	इकाई 8	कुतुप(वाद्यवृंद), प्रबंध और संगीत तथा सौंदर्यशास्त्र	87-97
12	इकाई 9	भारतीय शास्त्रीय संगीत मे प्रयुक्त अवनद्ध वाद्य यंत्रों की आधारभूत जानकारी (तबला और पखावज) तथा शास्त्रीय संगीत और फिल्मी संगीत	98-111
13		महत्त्वपूर्ण प्रश्न- कार्यभार	112

प्राक्कथन

संगीत स्नातक के नवीन पाठ्यक्रम के क्रियात्मक विषय के MUSA 305TH में संगीत से सम्बन्धित उपयोगी सामग्री का समावेश किया गया है। संगीत में प्रायोगिक तथा सैद्धान्तिक दोनों पक्षों का योगदान रहता है। गायन तथा वादन में भी इन्हीं दोनों पक्षों का महत्वपूर्ण स्थान रहता है। प्रस्तुत पाठ्यक्रम में संगीत की सैद्धान्तिक परीक्षा को ध्यान में रखकर पाठ्य सामग्री दी गई है।

इस पुस्तक के

इकाई । में टप्पा और वर्ण आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 2 में काकु और ठुमरी आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 3 में एकताल और चौताल आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 4 में दीपचंदी और धमार ताल आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 5 में त्रिवट, दादरा चतुरंग और निबद्ध गान और अनिबद्ध गान आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 6 में थाट और स्थाय आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 7 में घराना का वर्णन किया गया है।

इकाई 8 में कुतुप(वाद्यवृंद), प्रबंध और संगीत तथा सौंदर्यशास्त्र का वर्णन किया गया है।

इकाई 9 में भारतीय शास्त्रीय संगीत मे प्रयुक्त अवनद्ध वाद्य यंत्रों की आधारभूत जानकारी (तबला और पखावज) तथा शास्त्रीय संगीत और फिल्मी संगीत का वर्णन किया गया है।

प्रत्येक इकाई में शब्दावली, स्वयं जांच अभ्यास प्रश्न तथा उत्तर, संदर्भ, अनुशंसित पठन, पाठगत प्रश्न दिए गए हैं।

प्रस्तुत पाठ्यक्रम को लिखने के लिए स्वयं के अनुभव से, संगीतज्ञों के साक्षात्कार से तथा संगीत से सम्बन्धित पुस्तकों द्वारा शिक्षण सामग्री एकत्रित की गई है। मैं उन सभी संगीतज्ञों तथा लेखकों का आभारी हूं जिनके ज्ञान द्वारा तथा जिनकी संगीत संबंधी पुस्तकों द्वारा शिक्षण सामग्री को यहां लिया गया है। आशा है कि विद्यार्थियों के लिए यह पुस्तक लाभप्रद होगी।

COURSE CODE MUSA305TH
B.A.3rd Year

HINDUSTANI MUSIC (Vocal & Instrumental)

3 Lectures /week

Duration	Paper-VI Theory (Unit-I)	Max Marks	Credits
3 hours.		50(35+15Assesment)	3

Title-Theory of Indian Music and Ghrarana tradition.

There will be three sections, candidates shall have to answer one question from each section & two from any of the three sections thus five questions in all.

SECTION-I

1. Defination of the following:-

a. Nibadha
b. Anibadha
c. Prabandha,
d. Kaku
e. Sthaya
f. Varna
g. Orchestra (Vadyavrind),
h. Chorus (Vrindgana)

SECTION-II

2. Basic knowledge of percussion instruments used in classical music Tabla&Pakkawaj
3. Describe basic 10 thaats.
4. Write about the Gharanaprampara of Hindustani Music
5. Forms of Music – Thumri, Tappa, Dadra, Chaturung

SECTION-III

6. Write the Thekas of EkTaal, Chautal, DeepchandiDhamar along with Dugun, Tigun and Chaugun
7. Essay on following topics
(a) Classical Music and Film Music
(b) Music and Aesthetics

इकाई-1
टप्पा और वर्ण

इकाई की रूपरेखा

1.1	भूमिका
1.2	उद्देश्य
1.3	टप्पा परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 1
1.4	वर्ण परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 2
1.5	सारांश
1.6	शब्दावली
1.7	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
1.8	संदर्भ
1.9	अनुशंसित पठन
1.10	पाठगत प्रश्न

1.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA305 की यह पहली इकाई है। इस इकाई में संगीत, विशेष रूप से गायन और सितार वाद्य के संदर्भ में, टप्पा और वर्ण का अर्थ परिचय और विस्तृत अध्ययन किया गया है। साथ ही टप्पा के प्रकार और वर्ण के विभिन्न प्रकारों का विस्तृत अध्ययन एवं वर्णन किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। रागों में मधुरता और वैचित्र्य लाने के लिए अभ्यास किया जाता है। अभ्यास से गायक की आवाज मे परिपक्क्वता और वादक के वादन मे मधुरता और तैयारी साफ झलकती है। वर्ण के विभिन्न प्रकारों को क्रियात्मक रूप मे आसानी से समझा जा सकता है। टप्पा गायन शैली बहुत ही मधुर गायन शैली है, जिसके लिए आवाज का तैयार होना अत्यंत आवश्यक है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात विद्यार्थी टप्पा गायन शैली और वर्ण का अर्थ परिभाषा एवं विस्तृत रूप को समझ पायेगे और साथ ही टप्पा और वर्ण के प्रकारों का भी गूढ़ता से अध्ययन कर पाएंगे।

1.2 उद्देश्य

टप्पा और वर्ण विषय इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् विद्यार्थी

- टप्पा विषय का अर्थ समझ सकेंगे।
- टप्पा के गहन अर्थ के साथ-साथ उन रागों का भी अध्ययन कर पाएंगे जिनमे टप्पा गायन किया जाता है।
- वर्ण विषय का अर्थ समझ सकेंगे।
- वर्ण के विभिन्न प्रकारों को समझ सकेंगे।

- इन विषयों के अध्ययन से गायन या वादन मे रागों को क्रियात्मक रूप मे समझने मे सहायता प्राप्त होगी।

इन उद्देश्यों के माध्यम से, विद्यार्थी न केवल टप्पा और वर्ण के तकनीकी पहलुओं को जान पाएंगे, बल्कि इसके गहरे सांगीतिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक महत्व को भी समझ सकेंगे। इससे उनके संगीत के प्रति दृष्टिकोण में गहराई और समृद्धि आएगी, साथ ही मंच प्रदर्शन मे परिपक्क्वता का अनुभव भी प्राप्त होगा, जो कि उनके भविष्य में सहायक सिद्ध होगा।

1.3 टप्पा

टप्पा गायन शैली के विषय में ऐसा कहा जाता है कि मियां शोरी ने बेसरा गीति के आधार पर इस शैली की रचना की। इस गायन शैली का उद्गम पंजाब के पहाड़ी क्षेत्रों में हुआ। इसका विकास अवध के दरबार में हुआ। यह शैली अत्यंत चंचल मानी जाती है। टप्पा गायकी में स्वर, शब्द, लय को कहीं भी विश्राम नहीं दिया जाता है। इस गायकी में केवल तान तथा बोलतान का ही प्रयोग होता है। तानें छोटी तथा द्रुत गति की होती है। इस गायकी के साथ टप्पा ताल बजती है। यह 16 मात्रा की ताल है। टप्पा के इस काव्य की भाषा पंजाबी होती है। पर अब हिन्दी आदि भाषाओं का प्रयोग भी किया जानें लगा है। यह श्रृंगार तथा करुण रस प्रधान गायकी है। इस गायकी की विशेषता यह है कि इसमें आलाप नहीं लिया जाता बल्कि कण, खटका, मुर्की आदि का प्रयोग काफी होता है। इस गायकी को गाने के लिए चपल तथा तैयार कंठ की आवश्यकता होती है। टप्पा को अधिकतर पीलू, खमाज, आदि चंचल प्रकृति के रागों में गाया जाता है।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

1.1 टप्पा गायन शैली का आविष्कारक कौन है?

1 अकबर

2 तानसेन

3 बैजु बाबरा

4 मियां शोरी

1.2 टप्पा गायन शैली कौन सी गीति से उत्पन्न मानी जाती है?

1 शुद्धा

2 बेसरा

3 गौड़ी

4 भिन्ना

1.3 अधिकतर टप्पा गायन शैली की भाषा क्या रहती है?

1 संस्कृत

2 अवधी

3 मलयालम

4 पंजाबी

1.4 टप्पा गायन शैली के साथ कौन सा ताल बजाया जाता है?

1 टप्पा ताल

2 चौताल

3 दीपचंदी

4 दादरा ताल

1.5 टप्पा गायन शैली अधिकतर किन प्रकृति वाले रागों मे गया जाता है?

1 गंभीर प्रकृति

2 चंचल प्रकृति

3 दोनों

4 कोई नहीं

1.4 वर्ण

अभिनव राग मंजरी ग्रंथ के अनुसार-

गान क्रियोच्यते वर्णःस चतुर्धा निरूपितः

स्थाय्यारोह्यरोही च संचारीत्यथ लक्षणम्।

अर्थात गाने की जो क्रिया है, उसे वर्ण कहते हैं। अर्थात गायन या वादन मे जो क्रियाएं प्रयोग की जाती हैं, वर्ण कहलाती हैं। वर्ण चार प्रकार के होते हैं, जिन्हें क्रमशः 1 स्थायी,2 आरोही, 3 अवरोही और 4 संचारी वर्ण कहते हैं।

स्थायी वर्ण-

एक ही स्वर बार-बार ठहर-ठहरकर बोलने या गाने की क्रिया को स्थायी वर्ण कहते हैं। जैसे- सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग, म म म, प प प। स्थायी का अर्थ है ठहर हुआ।

आरोही वर्ण-

नीचे के स्वर से ऊंचे स्वर तक चढ़ने या गाने की क्रिया को आरोही वर्ण कहते हैं। षडज से आगे ऋषभ और उसके बाद गांधार स्वरों तक एक-एक करके गाने कि क्रिया को आरोही क्रम कहा जाता है। उदाहरण के लिए- सा, रे, ग, म, प, ध, नि। आरोही का अर्थ है नीचे के स्वरों से ऊपर के स्वरों की ओर बढ़ना।

अवरोही वर्ण-

ऊंचे स्वरों से नीचे के स्वरों आने कि क्रिया या गाने की क्रिया को अवरोही वर्ण कहते हैं। तार सप्तक के सां से जब नीचे के स्वरों को बोला या गया जाता है तो वो अवरोही वर्ण है। उदाहरण के लिए- सां, नि, ध, प, म, ग, रे, सा। अवरोही का अर्थ है ऊपर के स्वरों से नीचे के स्वरों की ओर आना

संचारी वर्ण-

स्थायी, आरोही और अवरोही , इन तीनों वर्णों के संयोग (मिलावट) से जब स्वरों की उलट पलट की जाती है, अर्थात जाब तीनों वर्ण मिलकर अपना रूप दिखाते हैं, तब इस क्रिया को संचारी वर्ण कहते हैं। उपरोक्त तीनों वर्णों का मिश्रण संचारी वर्ण कहलाता है। उदाहरण के लिए- सा सा, रे ,रे ग,म,,प म, ग, रे, ध, ग, रे, सा।

ज्ञातव्य- गाते बजाते समय उपर्युक्त चारों वर्ण प्रयोग मे लाए जाते हैं। किसी भी संगीत गायन/वादन विधा मे चारों वर्ण अवश्य ही मिलेंगे, क्यूंकि इन चारों वर्णों के बिना गाँ क्रिया चल नहीं सकती।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

1.6 गाने की क्रिया को क्या कहते हैं?

1 क्रिया

2 नाद

3 वर्ण

4 सप्तक

1.7 "सा रे ग म प ध नि" वर्ण का कौन सा प्रकार है?

1 आरोही वर्ण

2 आभोगी वर्ण

3 संचारी वर्ण

4 अवरोही वर्ण

1.8 "सां नि ध प म ग रे सा " वर्ण का कौन सा प्रकार है?

1 आरोही वर्ण

2 आभोगी वर्ण

3 संचारी वर्ण

4 अवरोही वर्ण

1.9 "सा सा सा सा रे रे रे रे " वर्ण का कौन सा प्रकार है?

1 आरोही वर्ण

2 स्थायी वर्ण

3 संचारी वर्ण

4 अवरोही वर्ण

1.10 “सा सा सा सा रे रे रे रे ग म प म ग रे सा रे सा ” वर्ण का कौन सा प्रकार है?

1 आरोही वर्ण

2 स्थायी वर्ण

3 संचारी वर्ण

4 अवरोही वर्ण

1.11 किस ग्रंथ मे वर्ण की परिभाषा गान क्रियोच्यते वर्णः दी गई है?

1 अभिनव राग मंजरी

2 संगीत पारिजात

3 नाट्यशास्त्र

4 राग मालिका

1.5 सारांश

टप्पा और वर्ण भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक महत्वपूर्ण विषय है, जिसके बिना संगीत की कल्पना भी नहीं की जा सकती। राग पर ही तो हिन्दुस्तानी शासतीय संगीत आधारित है। रागों के अभ्यास से अलंकारों के अभ्यास से शास्त्रीय संगीत मे तैयारी और परिपक्क्वता आती है, जो श्रोताओं को अनायास ही मंत्रमुग्ध करती हैं। शास्त्रीय संगीत के अभ्यास से संगीतज्ञ के गायन वादन मे रंजकता और परिपक्क्वता आती है। रागों के अभ्यास से किसी भी तरह के संगीत को गाने बजने मे समस्या नहीं होती। क्यूंकि शास्त्रीय संगीत, संगीत का आधार है। इसके बिना किसी भी अन्य संगीत मे पारंगत नहीं बना जा सकता। टप्पा गायन के लिए भी आवाज का तैयार होना अति आवश्यक है। अगर गले की तैयारी सही होगी तो श्रोता अनायास ही मंत्रमुग्ध हो जाएंगे।

1.6 शब्दावली

- अलंकार (Alankar): जिस प्रकार एक स्त्री सुन्दर दिखने के लिए आभूषणों से खुद को सजाती है वही स्थान संगीत मे अलंकार का है।

- राग (Raga): संगीत का एक विशेष संरचनात्मक पद्धति, जो स्वरों के विशेष क्रम का उपयोग करके भावनात्मक और मनोरंजन को व्यक्त करता है।
- ताल (Taal): संगीत में अंकित समय स्तर को ताल कहा जाता है, जो गायन या वादन के साथ समय की गणना करने में मदद करता है।
- लय (Lay): संगीत में गति या चलन को लय कहा जाता है, जो ताल की गति को निर्दिष्ट करता है।
- रागिनी (Ragini): रागों की सहायक संगीत पद्धति जिसमें संगीत रागों के विभिन्न अनुभवों और भावों को व्यक्त करने के लिए मेलोडी और ताल का उपयोग किया जाता है।
- श्रुति (Shruti): संगीत में सबसे छोटे स्वर को श्रुति कहा जाता है, जो स्वर स्थान पर किसी भी विस्तार में पाया जा सकता है।
- स्वर (Swar): संगीत में विभिन्न ऊर्जाओं को स्थान देने वाले तारों को स्वर कहा जाता है, जो संगीत के मूल भाग हैं।
- मेलोडी (Melody): संगीत में स्वरों के विशेष क्रम का एक संरचित और आकर्षक संयोजन, जिससे एक गाना या संगीत कविता का निर्माण होता है।
- अलंकार (Alankaar): संगीत में आकर्षकता और सौंदर्य को बढ़ाने के लिए स्वरों या ताल के विशेष प्रयोग को अलंकार कहा जाता है।
- जाति (Jati): रागों में लगने वाले स्वरों की विभिन्न संख्याओं के कारण उनमें जो अलग-अलग वर्ग किये गये हैं उन्हें रागों की जातियाँ कहते हैं।
- पीलू (Piloo) भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक बहुत ही मधुर राग।

1.7 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

आत्म-मूल्यांकन प्रश्न 1

1.1 उत्तर: 4

1.2 उत्तर: 2

1.3 उत्तर: 4

1.4 उत्तर: 1

1.5 उत्तर: 2

आत्म-मूल्यांकन प्रश्न 2

1.6 उत्तर: 3

1.7 उत्तर: 1

1.8 उत्तर: 4

1.9 उत्तर: 2

1.10 उत्तर: 3

1.11 उत्तर: 1

1.8 संदर्भ

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). कर्मिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2010). राग परिचय (भाग 4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

प्रो. केशव शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. निर्मल सिंह द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

1.9 अनुशंसित पठन

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 2), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (1998). मधुर स्वरलिपि संग्रह. संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

1.10 पाठगत प्रश्न

टप्पा

प्रश्न 1. टप्पा का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. टप्पा का अर्थ, उद्गम और विकास को विस्तार से लिखिए।

वर्ण

प्रश्न 3. वर्ण का अर्थ एवं परिभाषा लिखिए।

प्रश्न 4. वर्ण का अर्थ परिभाषा और इसके प्रकारों का विस्तार से वर्णन करे।

प्रश्न 5. वर्ण का अर्थ परिभाषा और स्थायी और आरोही वर्ण का उदाहरण सहित विस्तार से वर्णन करे।

प्रश्न 6. वर्ण का अर्थ परिभाषा और अवरोही और संचारी वर्ण का उदाहरण सहित विस्तार से वर्णन करे।

इकाई-2
काकु और ठुमरी

इकाई की रूपरेखा

2.1	भूमिका
2.2	उद्देश्य
2.3	काकु परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 1
2.4	ठुमरी परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 2
2.5	सारांश
2.6	शब्दावली
2.7	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
2.8	संदर्भ
2.9	अनुशंसित पठन
2.10	पाठगत प्रश्न

2.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA305 की यह दूसरी इकाई है। इस इकाई में संगीत, विशेष रूप से गायन और सितार वाद्य के संदर्भ में, काकु और ठुमरी गायन शैली का अर्थ परिचय और विस्तृत अध्ययन किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। रागों में मधुरता और वैचित्र्य लाने के लिए अलंकारों का अभ्यास किया जाता है। अलंकारों के अभ्यास से गायक की आवाज मे परिपक्वता और वादक के वादन मे मधुरता और तैयारी साफ झलकती है। इसी तैयारी के साथ ही जब कलाकार ठुमरी गायन शैली को श्रोताओं के समक्ष प्रस्तुत कर्ता है तो श्रोता अनायास ही मंत्रमुग्ध हो जाते हैं। किसी भी गायन शैली में जो आवाज का उतार-चढ़ाव होता हैं उसे संगीत की भाषा मे काकु कहा जाता है। काकु के आधार पर ही गायक या वादक अपने प्रस्तुति मे चार चाँद लगता है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी काकु और ठुमरी गायन शैली विषय का अर्थ परिभाषा और काकु के प्रकार और ठुमरी से अंगों के बारे मे विस्तार से अध्ययन कर पाएंगे तथा साथ ही सितार वादन या गायन मे काकु और टप्पा के अभ्यास से के अभ्यास से अपने गायन और वादन मे मधुरता ला सकेंगे।

2.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् विद्यार्थी

- काकु विषय का अर्थ समझ सकेंगे।
- काकु के प्रकारों को समझ सकेंगे।
- काकु के प्रकारों को समझ कर अपने गायन या वादन मे समाहित कर सकेंगे।

- ठुमरी गायन शैली का अर्थ समझ सकेंगे।
- ठुमरी गायन शैली के अंगों को विस्तार से समझ सकेंगे।
- गायन या सितार सितार वाद्य पर काकु के माध्यम से ठुमरी गायन या वादन का सकेंगे।

इन उद्देश्यों के माध्यम से, विद्यार्थी न केवल काकु और ठुमरी के तकनीकी पहलुओं को जान पाएंगे, बल्कि इसके गहरे सांगीतिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक महत्व को भी समझ सकेंगे। इससे उनके संगीत के प्रति दृष्टिकोण में गहराई और समृद्धि आएगी, साथ ही मंच प्रदर्शन मे परिपक्क्वता का अनुभव भी प्राप्त होगा, जो कि उनके भविष्य में सहायक सिद्ध होगा।

2.3 काकु

काकु का अर्थ मूलतः ध्वनि के उतार-चढ़ाव से है। आवश्यकतानुसार भावोत्पत्ति के लिए स्वरों को उतार-चढ़ाकर, आवाज को मधुर, कोमल अथवा कर्कश और तीव्र बनाकर व प्रयोग करने को ही काकु कहते हैं। काकु द्वारा आवाज में सांगीतिक भाव दिखाने की क्षमता अनन्त है, जो कि अनेक भावों, विचारों एवं आन्तरिक इच्छाओं को व्यक्त कर सकती है। संगीत का सौन्दर्य इच्छानुसार भाव उत्पन्न करने वाली • ध्वनि में ही निहित है। भाव के बिना संगीत नीरस प्रतीत म होता है और केवल शोरगुल जैसा लगता है। वही. संगीत व हृदय की गहराइयों को छू सकता है, जो भावों से ओतप्रोत है। संगीत कला पूर्णतः नाद पर आधारित है। उसकी व अभिव्यक्ति अन्य किसी भी माध्यम द्वारा नहीं होती है। ह इसलिए उसका प्रत्येक प्रसंग ध्वनि से ही संबंधित होता है। इसकी अनुभूति कानों द्वारा होती है। संगीत की अनुभूति केवल स्वरों पर आधारित होने के

कारण इसमें शब्दों का सहयोग आवश्यक होता है। इसलिये संगीत को विश्वव्यापी भाषा कहा गया है। नाटक तथा संगीत दोनों में ही ध्वनि द्वारा भावों को मी उत्पन्न करने कों काफु कहते हैं। भरत ने नाटयशास्त्र के। सत्रहवें अध्याय में काकु का विस्तृत वर्णन दिया है। ए पं० शारंगदेव ने प्रकीर्णकाध्याय में दस विशिष्ट स्थायों में से। छाया स्थाय के अन्तर्गत काकु का विवरण दिया है। छाया मों का अर्थ परछाई के अलावा रंग-रूप और रंग के उतार-चढ़ाव र से भी है। संगीत में ध्वनि के रंग-रूप और उतार-चढ़ाव के। प्रयोग को जिसके द्वारा भावमय बनाया जा सके, उसे काकु में कहते हैं। काकु शब्द

की उत्पत्ति संस्कृत की 'कक्' धातु से । हुई है, जिसका अर्थ है ध्वनि का लचीलापन अथवा न भावाभिव्यक्ति । अमरकोश में इसकी परिभाषा इस प्रकार दी गई है। कौआ दु:ख, भय आदि के कारण होने वाली ध्वनि का स्त्री रूपान्तरण है। अर्थात् काकु शब्द स्त्रीलिंग है जिसका अर्थ ध्वनि के उतार चढ़ाव से है, जिसके द्वारा शोक, भय आदि भावों की के अभिव्यक्ति होती है। ध्वनि की यह विशेषता है कि भावों में में तनिक सा भी परिवर्तन होने पर ध्वनि विकार में भी परिवर्तन हमें होता है, जो कि भावों के परिवर्तन का सूचक है। सुखद एवं न दुखःद परिस्थितियों में व्यावहारिक परिवर्तन न केवल मानव, त किन्तु सभी जीव-जन्तुओं में भी पाया जाता है। भरत के काकु के 6 अंग बताए हैं। वे विच्छेद, अर्पण, विसर्ग अनुबन्ध, दीपन एवं प्रशमन है। विच्छेद विराम के लिए किया जाता है, कई बार शब्दों की जगह विराम । अधिक प्रभावशाली होता है। लीलायमान, मधुर एवं वल्गु - स्व से रंगस्थल को आपूरण करते हुए जो पाठ करते हैं, र वह अर्पण है। विसर्ग के माने हैं वाक्य का न्याय। अनुबन्ध से तात्पर्य है पदान्तर में निरन्तरता। तीन स्थानों में जो क शोभायमान है और वर्धमान स्वर है, वह दीपन है। उच्च ध्वनि से नीची ध्वनि में धीमी गति में आने को प्रशमन कहते हैं।

संगीत में भावाभिव्यक्ति के लिए इन सभी का बहुत महत्त्व है। कई बार स्वरावलियों में किसी एक स्वर पर ठहराव करने से ऐसे भाव व्यक्त होते हैं, जो कि स्वरसमूह न द्वारा नहीं हो पाते। कई बार स्वरों में निरन्तरता से एक कने लड़ी जैसी बन जाती है, जो कि भावाभिव्यक्ति में सहायक । होती है। स्वरों का मधुरता से उच्चारण करने से कर्णेन्द्रियों । से परे हटने पर भी मानसिक स्थल पर स्वरों के भाव उभरते रहते हैं। जैसे वाक्य अन्त में पूर्णता का आभास के होता है, उसी प्रकार किसी स्वरावली के समाप्त होने पर ये भी पूर्णता का आभास होता है। भावनुकूल स्वरोच्चारण में तीव्र अथवा कोमल ध्वनि में उच्चारण करने से भी भावाभिव्यक्ति होती है। इस प्रकार हम देखते हैं कि काकु के इन सभी अंगों का प्रयोग संगीत को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिये किया जाता है।

काकु भेद- पं० शारंगदेव ने संगीत के संदर्भ में काक की व्याख्या की है। उन्होंने छः प्रकार के काकु का वर्णन किया है। यथा-

छः प्रकार के होते हैं छाया, कौवे, स्वर रज्जु और अन्य जोशीले वाद्ययंत्र। अर्थात छाया काकु छह प्रकार के होते हैं: स्वर, राग, अन्य राग, देश, क्षेत्र और वाद्य काकु।

1 स्वर काकु- स्वर काकु के अन्तर्गत श्रुति के न्यूनाधिक प्रयोग का विशिष्ट उल्लेख है, जिससे एक स्वच अनेक सांगीतिक रंगों को प्राप्त करता है। एक ही स्वच अपनी कोई श्रुति त्याग देने पर अथवा अन्य स्वर की एक श्रुति ग्रहण कर लेने पर अनेक विभिन्न रूपों को प्राप्त करता है। राग भाव को प्रदर्शित करने में स्वरों के ये रूप अपना विशिष्ट सहयोग देते हैं, जिस कारण वही बारह स्वस विभिन्न रागों मे विभिन्न रूपों से प्रयुक्त होकर सौन्दर्य के असीमित रूपों को उभारने में सहायक होते हैं। यह स्वस काकु जिससे अभिप्राय स्वर के विशिष्ट लगाव से होता है. रागों का निजी व्यक्तित्व देने, राग भाव को उभारने एक रंजकता पैदा करने में सहायक होता है। किसी राग में तीव्र स्वर, किसी में कोमल, किसी में अति कोमल स्वर आदि का प्रयोग स्वर काकु द्वारा ही संभव होता है। यह सर्वमान्य नियम है कि जब स्वर कोमल अथवा अति कोमल होता है, तो अपने नीचे के स्वर की श्रुति को प्राप्त करता है अथवा स्वर का झुकाव नीचे के स्वर की ओर होता है और स्वर तीव्र तथा चढ़ा हुआ होता है तो अपने ऊपर नीचे के स्वर की ओर उसका झुकाव होता है। सीधे खड़े स्वर के प्रयोग करने से भी उसकी श्रुति सामान्य से ऊंची होती है। न्यास, आन्दोलन, कण आदि करने से भी स्वर को नया रूप मिलता है।

2. राग काकु-राग की अपनी छाया राग काकु कहलाती है। तात्पर्य यह है कि विशेष स्वरावली जो राग की पहचान कराती है, राग काकु कहलाती है। राग काकु स्वर काकु से तो साज्जित होता ही है, साथ उस विशेष राग के नियमों के अनुकूल ऐसी विशिष्ट स्वर समूह की रचना होती है, जो उस विशेष राग का परिचय देती है। जैसे राग तोड़ी में नी सग्र स्वरसमूह राग का परिचय देने में असमर्थ है, ह क्योंकि इसमें राग काकु नहीं है। अतः धृ नी सरे ग्र, प्रेग्र स रेस अथवा रेग्रम धमग्र रेग्रम रेग्र रेस आदि स्वर समूह तोड़ी की पहचान कराते हैं, क्योंकि स्वरों का क्रम, उच्चारण स्थान आदि सभी अनिवार्य तत्त्व इसमें सम्मिलित है। इस प्रकार हम देखते हैं कि राग काकु में स्वर काकु भी रहता है।

3. अन्य राग काकु - राग की बढ़त करते समय किसी अन्य राग की छाया अन्य राग काकु कहलाती है। जैसे-मारवा अथवा सोहनी, रागों में प्रस्तुतीकरण के समय कलाकार । दूसरे राग की तनिक छाया-सी दिखाता है, किन्तु फिर मुख्य राग काकु का प्रयोग कर उस छाया को समाप्त कर a, देता है ताकि मुख्य राग का व्यक्तित्व स्थापित हो जाए और राग का भाव नष्ट न होने पाये। दो रागों के मिश्रण से बने केरागों में भी अन्य राग काकु देखने को मिलता है। काकु ने र उपरोक्त तीन प्रकारों का सम्बंध क्रियात्मक पक्ष से है। र अर्थात् राग भाव को उत्पन्न करने में इनका सहयोग एवं • प्रभाव रहता

है। आगे के तीन प्रकारों का सम्बन्ध संस्कृति, व्यवहार एवं वाद्यों से है, जिसका प्रभाव उत्पन्न ध्वनि में अनेक रागों को उजागर करने की क्षमता रखता है।

4. देश काकु - इससे तात्पर्य किसी विशेष स्थान, देश अथवा राज्य से है, जिसका प्रभाव राग पर पड़ता है। यह दो प्रकार से हाता है- प्रथम किसी विशेष स्थान से जुड़ी कोई धुन अथवा राग जिसकी रचना वहाँ के लोगों द्वारा वहाँ की संस्कृति और समाज पर आधारित हो। इसमें हम - देखते हैं कि कई राग और धुनें प्रदेश के नाम से जानी जाती हैं। जैसे-भटियाली, पहाड़ी, बंगाल-भैरव आदि। द्वितीय, राज्यविशेष की संस्कृति एवं समाज के प्रभाव के कारण वा भाषा, उच्चार एवं लगाव की विशिष्ट शैली।

5. क्षेत्र काकु- क्षेत्र से अभिप्राय शरीर से है। प्रत्येक २ व्यक्ति की आवाज का अपना निजी गुण होता है। किसी की आवाज जोरदार, किसी की 'हल्की, किसी भी भारी - अथवा बारीक होती है और साथ ही प्रत्येक व्यक्ति भिन्न न भिन्न रीति से राग प्रस्तुत करता है। इस सबका प्रभाव राग प्रस्तुतीकरण में होता है। इसके कारण एक ही राग अनेक • कलाकारों द्वारा प्रस्तुत किये जाने पर भिन्न-भिन्न रूपों को पाता है।

6. यंत्र काकु- यंत्र काकु का सम्बन्ध वाद्य से है। यंत्र काकु से अभिप्राय प्रत्येक वाद्य की विशिष्ट ध्वनि से है। जैसे- वीणा, सितार, बांसुरी आदि की ध्वनि भिन्न होती है। यही नहीं, बल्कि एक ही प्रकार के दो वाद्यों की ध्वनि भिन्न - होती है। जैसे दो वीणाओं अथवा दो सितारों की ध्वनि एक समान नहीं होती। प्रत्येक वाद्य की ध्वनि तथा उससे प्राप्त - तकनीक, उसकी बनावट एवं सामग्री पर आधारित होती है। यथा दरबारी कान्हड़ा जैसा राग संतूर वाद्य के लिए उपयुक्त नहीं है क्योंकि यह वाद्य राग के अनुकूल मींड, गमक आदि को उत्पन्न करने में असमर्थ है।काकु जिसका विशेष प्रयोग भावाभिव्यक्ति में वृद्धि करने के लिए किया जाता है, भारतीय संगीत के सौन्दर्य विधान का महत्त्वपूर्ण एवं अभिन्न अंग है।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

2.1 काकु की संख्या कितनी है?

1) पाँच

2) चार

3) छः

4) अन्य

2.2 इनमे से कौन सा काकु का प्रकार नहीं है?

1) नंदा

2) क्षेत्र काकु

3) देश काकु

4) यंत्र काकु

2.3 इनमे से कौन स काकु का प्रकार है?

1) सन्मुखा

2) वीचित्रा

3) श्रुति

4) राग काकु

2.5 Modulation of Voice क्या है?

1) सप्तक

2) नाद

3) ग्राम

4) काकु

2.4 ठुमरी

ठुमरी के विषय में ऐसा कहा जाता है कि जो स्वरूप आधुनिक ठुमरी का है वही स्वरूप पहले 'गौड़ी' गीति का हुआ करता था। समयानुसार मुगल काल में इसे ठुमरी के नाम से जाना जाने लगा। ठुमरी एक भाव प्रधान तथा चंचल गीत का प्रकार है। इससे श्रृंगार रस का ही अधिकतर निष्पादन किया जाता है। ठुमरी में स्वर, ताल आदि तो प्रमुख हैं परन्तु काव्य

पक्ष भी प्रबल रहता है। शब्दों की कोमलता तथा उन्हें गाने का ढंग ठुमरी की विशेषता है। शब्दों के लालित्य पूर्ण उच्चारण से ही गीत के भाव तथा रस को व्यक्त किया जाता है।

ठुमरी की काव्य रचना छोटी होती है। इसका भाव अधिकतर श्रृंगारिक रहता है। ठुमरी गायकी का विकास नृत्य के साथ ही हुआ है। इसी भाव गीत (ठुमरी) को लेकर नृत्य तथा अभिनय किया जाता था। ठुमरी के चपल तथा गायन चंचल होने के फलस्वरूप इसे सभी रागों में नहीं गाया जाता है। इसके लिए ठुमरी के समान ही चपल तथा चंचल जाने रागों को लिया जाता है। जैसे खमाज, मांड, पीलू, आदि। तालों का चयन भी विशेष महत्व का है, जैसे दादरा, कहरवा आदि। ठुमरी में अधिकतर चंचल (चाचर) ताल का काव्य प्रयोग किया जाता है।

ठुमरी गायकी में कण, मुर्की, खटका, मींड, आदि से शब्दों अलंकृत छोटे-छोटे भावुक आलाप, तान होते हैं। अधिकतर ठुमरी में पहले चाचर ताल का प्रयोग धीमी लय में होता है गाई फिर धीरे-धीरे लय बढ़ाते हैं तथा तीन ताल में गायन करते हैं। ठुमरी दो अंगों से गाई जाती है-

1) पूरब अंग

2) पंजाबी अंग।

अंग का अर्थ घराना या विशिष्ट गायन शैली है।

पंजाब शैली में काव्य (गीत) की भाषा पंजाबी या ब्रज होती है। इस शैली में ध्वनि की मधुरता, कण, मुर्की आदि का काम अधिक रहता है। छोटी-छोटी तानों का प्रयोग किया है। एक ही स्वर में विभिन्न रूपों को एक साथ गाना इस अंग की अपनी विशेषता है।

पूरब अंग की ठुमरी लखनऊ तथा बनारस में प्रचलित है। इस शैली में काव्य रचना श्रृंगारिक तथा छोटी रहती है।. इस शैली में धीमी लय तथा शब्दालाप का प्रयोग प्रमुखता से होता है।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

2.6 टप्पा गायन शैली का आविष्कारक कौन है?

1) अकबर

2) तानसेन

3) बैजु बाबरा

4) मियां शोरी

2.7 टप्पा गायन शैली कौन सी गीति से उत्पन्न मानी जाती है?

1) शुद्धा

2) बेसरा

3) गौड़ी

4) भिन्ना

2.8 अधिकतर टप्पा गायन शैली की भाषा क्या रहती है?

1) संस्कृत

2) अवधी

3) मलयालम

4) पंजाबी

2.9 टप्पा गायन शैली के साथ कौन सा ताल बजाया जाता है?

1) टप्पा ताल

2 चौताल

3) दीपचंदी

4) दादरा ताल

2.10 टप्पा गायन शैली अधिकतर किन प्रकृति वाले रागों मे गया जाता है?

1) गंभीर प्रकृति

2) चंचल प्रकृति

3) दोनों

4) कोई नहीं

2.5 सारांश

काकु और ठुमरी भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक महत्वपूर्ण विषय है, जिसके बिना अच्छे संगीत की कल्पना भी नहीं की जा सकती। जहां काकु के अभ्यास से शास्त्रीय संगीत मे तैयारी और परिपक्क्वता आती है, जो श्रोताओं को अनायास ही मंत्रमुग्ध करती हैं वहीं ठुमरी गायन से श्रोता मंत्रमुग्ध हो संगीत का रसपान करते हैं।

2.6 शब्दावली

- अंग (Aang): ठुमरी गायन शैली का एक प्रकार।
- बाज (Baaj): अंग को ही ब्याज भी कहा जाता है।
- राग (Raga): संगीत का एक विशेष संरचनात्मक पद्धति, जो स्वरों के विशेष क्रम का उपयोग करके भावनात्मक और मनोरंजन को व्यक्त करता है।
- ताल (Taal): संगीत में अंकित समय स्तर को ताल कहा जाता है, जो गायन या वादन के साथ समय की गणना करने में मदद करता है।
- लय (Lay): संगीत में गति या चलन को लय कहा जाता है, जो ताल की गति को निर्दिष्ट करता है।
- श्रुति (Shruti): संगीत में सबसे छोटे स्वर को श्रुति कहा जाता है, जो स्वर स्थान पर किसी भी विस्तार में पाया जा सकता है।
- स्वर (Swar): संगीत में विभिन्न ऊर्जाओं को स्थान देने वाले तारों को स्वर कहा जाता है, जो संगीत के मूल भाग हैं।

- मेलोडी (Melody): संगीत में स्वरों के विशेष क्रम का एक संरचित और आकर्षक संयोजन, जिससे एक गाना या संगीत कविता का निर्माण होता है।
- अलंकार (Alankaar): संगीत में आकर्षकता और सौंदर्य को बढ़ाने के लिए स्वरों या ताल के विशेष प्रयोग को अलंकार कहा जाता है।

2.7 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

आत्म-मूल्यांकन प्रश्न 1

2.1 उत्तर: 3

2.2 उत्तर: 1

2.3 उत्तर: 4

2.5 उत्तर: 2

आत्म-मूल्यांकन प्रश्न 2

2.6 उत्तर: 4

2.7 उत्तर: 2

2.8 उत्तर: 4

2.9 उत्तर: 1

2.10 उत्तर: 2

2.8 संदर्भ

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). कर्मिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2010). राग परिचय (भाग 4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

प्रो. केशव शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. निर्मल सिंह द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

2.9 अनुशंसित पठन

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 2), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (1998). मधुर स्वरलिपि संग्रह. संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

2.10 पाठगत प्रश्न

काकु विषय

प्रश्न 1. काकु का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. काकु विषय से आप क्या समझते हैं? विस्तार से वर्णन करें।

प्रश्न 3. काकु शब्द का अर्थ परिभाषा और इसके प्रकारों का विस्तृत वर्णन करें।

प्रश्न 4. काकु शब्द का अर्थ परिभाषा और इसके प्रकारों मे यंत्र काकु और क्षेत्र काकु का विस्तृत वर्णन करें।

प्रश्न 4. काकु शब्द का अर्थ परिभाषा और इसके प्रकारों मे राग काकु और अन्य राग काकु का विस्तृत वर्णन करें।

प्रश्न 5. काकु शब्द का अर्थ परिभाषा और इसके प्रकारों मे देश काकु और स्वरकाकु का विस्तृत वर्णन करें।

ठुमरी

प्रश्न 1. ठुमरी का संक्षिप्त परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. ठुमरी विषय से आप क्या समझते हैं? विस्तार से वर्णन करें।

प्रश्न 3 ठुमरी शब्द का अर्थ परिभाषा और इसके प्रकारों/अंगों/ बाजों का विस्तृत वर्णन करें।

इकाई-3
एकताल और चौताल

इकाई की रूपरेखा

3.1	भूमिका
3.2	उद्देश्य
3.3	एकताल परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 1
3.4	चौताल परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 2
3.5	सारांश
3.6	शब्दावली
3.7	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
3.8	संदर्भ
3.9	अनुशंसित पठन
3.10	पाठगत प्रश्न

3.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA305 की यह तीसरी इकाई है। इस इकाई में संगीत, विशेष रूप से गायन और सितार वाद्य के संदर्भ में, एकताल और चौताल का अर्थ परिचय और विस्तृत अध्ययन किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। लेकिन राग के साथ अगर ताल न हो तो ऐसे संगीत की तो हम कल्पना भी नहीं कर सकते। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं तो उन्हें राग के साथ ताल का भी उतना ही ज्ञान होना चाहिए जितना कि राग का। गायन या वादन का अभ्यास अगर ताल के साथ किया जाए तो ताल मे पकड़ तो आती ही है, साथ ही प्रस्तुति मे भी चार चाँद लग जाते हैं।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी एकताल और चौताल विषय का अर्थ परिभाषा और ताल की एकगुण, दुगुण और तीनगुण के बारे मे विस्तार से अध्ययन कर पाएंगे तथा साथ ही सितार वादन पर ताल के साथ अभ्यास से अपने वादन मे मधुरता परिपक्क्वता ला सकेंगे। विद्यार्थी इस विषय के अध्ययन के पश्चात स्वयं ताल को समझने और ताल के साथ न्याय करने में समर्थ हो सकेंगे।

3.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् विद्यार्थी

- ताल का अर्थ समझ सकेंगे।
- विभाग, सम, ताली और खाली का अर्थ समझ सकेंगे।
- एकताल का परिचय जान सकेंगे।

- चौताल का परिचय जान सकेंगे।
- एकताल की एकगुण दुगुण और तीन गुण करना जान सकेंगे।
- चौताल की एकगुण दुगुण और तीन गुण करना जान सकेंगे।
- एकताल के अभ्यास से किसी भी रचना को अच्छे से निभा सकेंगे।
- एकताल के अभ्यास से किसी भी रचना को अच्छे से निभा सकेंगे।

इन उद्देश्यों के माध्यम से, विद्यार्थी न केवल एकताल और चौताल के तकनीकी पहलुओं को जान पाएंगे, बल्कि इसके गहरे सांगीतिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक महत्व को भी समझ सकेंगे। इससे उनके संगीत के प्रति दृष्टिकोण में गहराई और समृद्धि आएगी, साथ ही मंच प्रदर्शन मे परिपक्क्वता का अनुभव भी प्राप्त होगा, जो कि उनके भविष्य में सहायक सिद्ध होगा।

3.3 एक ताल परिचय

ताल नाम- एक ताल

मात्राएं- बारह मात्राएं

वाद्य यंत्र- तबला वाद्य यंत्र का ताल

खाली- दो खाली (तीसरी और सातवीं मात्राओं पर)

विभाग- दो-दो मात्राओं के छः मात्र विभाग

ताली- पहली मात्रा पर सम तथा पाँचवीं, नौवीं और ग्यारहवीं मात्राओं पर क्रमशः पहली दूसरी और तीसरी ताली

खास विशेषता- इस ताल का प्रयोग भारतीय शास्त्रीय गायन एवं वादन के साथ किया जाता है।

एक ताल ठाह लय (एकगुण)

मात्राएं	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
बोल	धिं	धिं	धागे	तिरकिट	तू	ना	क	त्ता	धागे	तिरकिट	धिं	ना
चिन्ह	x		0		2		0		3		4	

एक ताल (दुगुण)

मात्राएं	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
बोल	धिंधिं	धागेतिरकिट	तूना	कत्ता	धागेतिरकिट	धिंना	धिंधिं	धागेतिरकिट	तूना	कत्ता	धागेतिरकिट	धिंना
चिन्ह	x		0		2		0		3		4	

तीन ताल (तिगुण)

मात्राएं	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
बोल	धिंधिंधागे	तिरकिट तूना	कत्ताधागे	तिरकिटधिं ना	धिंधिंधागे	तिरकिट तूना	कत्ताधागे	तिरकिटधिं ना	धिंधिंधागे	तिरकिट तूना	कत्ताधागे	तिरकिटधिं ना
चिन्ह	x		0		2		0		3		4	

एक ताल (चौगुण)

मात्राएं	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
बोल	धिंधिं धागेतिरकिट	तूना कत्ता	धागेतिरकिट धिंना	धिंधिं धागेतिरकिट	तूना कत्ता	धागेतिरकिट धिंना	धिंधिं धागेतिरकिट	तूना कत्ता	धागेतिरकिट धिंना	धिंधिं धागेतिरकिट	तूना कत्ता	धागेतिरकिट धिंना
चिन्ह	x		0		2		0		3		4	

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

3.1 एक ताल मे कितनी मात्राएं होती हैं?

1 13

2 14

3 10

4 12

3.2 एक ताल मे कितने मात्रा विभाग होते हैं?

1 5

2 8

3 6

4 12

3.3 एक ताल मे कौन सी मात्रा पर सम है ?

1 5

2 8

3 1

4 12

3.4 एक ताल मे कितनी ताली होती हैं?

1 5

2 3

3 5

4 12

4 उत्तर: 2

3.4 एक ताल मे कितनी खाली होती हैं?

1 5

2 3

3 5

4 2

3.4 चौताल परिचय

ताल नाम- चौताल ताल

मात्राएं- बारह मात्राएं

वाद्य यंत्र- पखावज वाद्य यंत्र का ताल

खाली- दो खाली (तीसरी और सातवीं मात्रा मात्रा पर)

विभाग- दो-दो मात्राओं के छः मात्रा विभाग

ताली- पहली मात्रा पर सम तथा पाँचवीं, नौवीं और ग्यारहवीं मात्राओं पर क्रमशः पहली दूसरी और तीसरी ताली

खास विशेषता- इस ताल का प्रयोग भारतीय शास्त्रीय संगीत मे ध्रुपद गायन विधा के साथ बहुतायत किया जाता है।

चार ताल ठाह लय (एकगुण)

मात्राएं	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
बोल	धा	धा	दिं	ता	किट	धा	दिं	ता	तिट	कत्	गदि	गन
चिन्ह	x		0		2		0		3		4	

चार ताल ठाह लय (दुगुण)

मात्राएं	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
बोल	धाधा	दिंता	किटधा	दिंता	तिटकत	गदिगन	धाधा	दिंता	किटधा	दिंता	तिटकत	गदिगन
चिन्ह	x		0		2		0		3		4	

चार ताल ठाह लय (तिगुण)

मात्राएं	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
बोल	धाधादिं	ताकिटधा	दिंतातिट	कतगदिगन	धाधादिं	ताकिटधा	दिंतातिट	कतगदिगन	धाधादिं	ताकिटधा	दिंतातिट	कतगदिगन
चिन्ह	x		0		2		0		3		4	

चार ताल ठाह लय (चौगुण)

मात्राएं	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
बोल	धाधादिंता	किटधादिंता	तिटकतगदिगन	धाधादिंता	किटधादिंता	तिटकतगदिगन	धाधादिंता	किटधादिंता	तिटकतगदिगन	धाधादिंता	किटधादिंता	तिटकतगदिगन
चिन्ह	x		0		2		0		3		4	

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

3.5 चार ताल मे कितनी मात्राएं होती हैं?

1) 10

2) 12

3) 13

4) 08

3.6 चार ताल मे कौन सी मात्रा पर सम होता है?

1) पाँचवीं

2) चौथी

3) पहली

4) कोई नहीं

3.7 चार ताल मे कितने मात्रा विभाग हैं?

1) 2

2) 3

3) 4

4) 6

3.8 चार ताल मे कितनी खाली होती हैं?

1) पाँच

2) एक

3) दो

4) एक भी नही

3.9 चार ताल मे सम को छोड़कर शेष कितनी तालियाँ है?

1) शून्य

2) दो

3) तीन

4) चार

3.5 सारांश

ताल भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक महत्वपूर्ण विषय है, जिसके बिना अच्छे संगीत की कल्पना भी नहीं की जा सकती। ताल के अभ्यास से शास्त्रीय संगीत मे तैयारी और परिपक्क्वता आती है, जो श्रोताओं को अनायास ही मंत्रमुग्ध करती हैं। शास्त्रीय संगीत मे एकताल और चौताल के अभ्यास से संगीतज्ञ के गायन वादन मे रंजकता और परिपक्क्वता आती है। ताल मे पकड़ के साथ किसी भी मात्रा से तान या बंदिश उठाकर सम पर विचित्रता पैदा करते हुए आया जाता है।

3.6 शब्दावली

- ताल (Taal): संगीत में अंकित समय स्तर को ताल कहा जाता है, जो गायन या वादन के साथ समय की गणना करने में मदद करता है।
- लय (Lay): संगीत के समान गति को लय कहते हैं, संगीत में लय अत्यंत महत्पूर्ण हैं, लय के बिना संगीत की कल्पना भी करना असंभव हैं।
- मात्रा (Matra): ताल की इकाई को मात्रा कहते हैं।
- ताली (Taali): सम के अलावा अन्य विभागों की पहली मात्रा पर जहाँ हथेली पर दुसरे हाथ की हथेली के आघात द्वारा ध्वनि उत्पन्न की जाती है, उसे ताली कहते हैं।
- खाली (Khali): ताल देते समय जहाँ विभाग की प्रथम मात्र पर ध्वनि न करके केवल हाथ हिलाकर इशारा कर देते हैं, उसे 'खाली' कहते हैं. अधिकतर खाली ताल के बीच की मात्र अथवा उसके आस पास हीं कहीं पड़ती है।

- विभाग (Vibhag): ताल को कुछ निश्चित मात्राओं में बांटना जिससे भरे एवं खाली जगहों का पता लगे उसे विभाग कहते हैं

3.7 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

3.1 उत्तर: 2

3.2 उत्तर: 3

3.3 उत्तर: 4

3.4 उत्तर: 3

3.5 उत्तर: 3

आत्म-मूल्यांकन प्रश्न 2

3.6 उत्तर: 4

3.7 उत्तर: 3

3.8 उत्तर: 3

3.9 उत्तर: 4

3.8 संदर्भ

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). कर्मिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2002). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2010). राग परिचय (भाग 4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

प्रो. केशव शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. निर्मल सिंह द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

3.9 अनुशंसित पठन

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 2), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (1998). मधुर स्वरलिपि संग्रह. संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

3.10 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. एकताल का परिचय एवं एकगुण लिखिए।

प्रश्न 2. चौताल ताल का परिचय एवं एकगुण लिखिए।

प्रश्न 3 एकताल और चौताल का परिचय एवं एकगुण लिखिए।

प्रश्न 4. एकताल का परिचय एवं एकगुण और दुगुण लिखिए।

प्रश्न 5. चौताल का परिचय एवं एकगुण और दुगुण लिखिए।

प्रश्न 6. एकताल और चौताल का परिचय एवं एकगुण और दुगुण लिखिए।

प्रश्न 7. एकताल और चौताल का परिचय एवं तीन ताल की एकगुण और दुगुण लिखिए।

प्रश्न 8. एकताल और चौताल का परिचय एवं चौताल की एकगुण और दुगुण लिखिए।

प्रश्न 9. एकताल और चौताल का परिचय एवं तीन ताल की एकगुण और तिगुण लिखिए।

प्रश्न 10 एकताल और चौताल का परिचय एवं चौताल की एकगुण और तिगुण लिखिए।

इकाई-4
दीपचंदी और धमार ताल

इकाई की रूपरेखा

4.1	भूमिका
4.2	उद्देश्य
4.3	दीपचंदी ताल परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 1
4.4	धमार ताल के उदाहरण
	स्वयं जांच अभ्यास 2
4.5	सारांश
4.6	शब्दावली
4.7	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
4.8	संदर्भ
4.9	अनुशंसित पठन
4.10	पाठगत प्रश्न

4.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA305 की यह चौथी इकाई है। इस इकाई में संगीत, विशेष रूप से गायन और सितार वाद्य के संदर्भ में, दीपचंदी और धमार ताल का अर्थ परिचय और विस्तृत अध्ययन किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। लेकिन राग के साथ अगर ताल न हो तो ऐसे संगीत की तो हम कल्पना भी नहीं कर सकते। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं तो उन्हें राग के साथ ताल का भी उतना ही ज्ञान होना चाहिए जितना कि राग का । गायन या वादन का अभ्यास अगर ताल के साथ किया जाए तो ताल मे पकड़ तो आती ही है, साथ ही प्रस्तुति मे भी चार चाँद लग जाते हैं।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी दीपचंदी और धमार ताल विषय का अर्थ परिभाषा और ताल की एकगुण, दुगुण और तीनगुण के बारे मे विस्तार से अध्ययन कर पाएंगे तथा साथ ही सितार वादन पर ताल के साथ अभ्यास से अपने वादन मे मधुरता परिपक्क्वता ला सकेंगे। विद्यार्थी इस विषय के अध्ययन के पश्चात स्वयं ताल को समझने और ताल के साथ न्याय करने में समर्थ हो सकेंगे।

4.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् विद्यार्थी

- ताल का अर्थ समझ सकेंगे।
- विभाग, सम, ताली और खाली का अर्थ समझ सकेंगे।
- दीपचंदी ताल का परिचय जान सकेंगे।
- धमार ताल का परिचय जान सकेंगे।
- दीपचंदी ताल की एकगुण दुगुण और तीन गुण करना जान सकेंगे।

- धमार ताल की एकगुण दुगुण और तीन गुण करना जान सकेंगे।
- दीपचंदी ताल के अभ्यास से किसी भी रचना को अच्छे से निभा सकेंगे।
- धमार ताल के अभ्यास से किसी भी रचना को अच्छे से निभा सकेंगे।

इन उद्देश्यों के माध्यम से, विद्यार्थी न केवल दीपचंदी और धमार ताल के तकनीकी पहलुओं को जान पाएंगे, बल्कि इसके गहरे सांगीतिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक महत्व को भी समझ सकेंगे। इससे उनके संगीत के प्रति दृष्टिकोण में गहराई और समृद्धि आएगी, साथ ही मंच प्रदर्शन मे परिपक्क्वता का अनुभव भी प्राप्त होगा, जो कि उनके भविष्य में सहायक सिद्ध होगा।

4.3 दीपचन्दी ताल परिचय

ताल नाम- दीपचंदी ताल

मात्राएं- चौदह मात्राएं

वाद्य यंत्र- तबला वाद्य यंत्र का ताल

खाली- एक खाली (आठवीं मात्रा पर)

विभाग- तीन-चार, तीन-चार मात्राओं के चार मात्रा विभाग

ताली- पहली मात्रा पर सम और चौथी एवं ग्यारहवीं मात्राओं पर क्रमशः पहली और दूसरी ताली होती है।

खास विशेषता- इस ताल का प्रयोग गीत , गजल, भजन और लोक संगीत मे बहुतायत किया जाता है।

दीपचन्दी ताल ठाह लय (एकगुण)

मात्राएं	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
बोल	धा	धिं	ऽ	धा	धा	तिं	ऽ	ता	तिं	ऽ	धा	धा	धिं	ऽ
चिन्ह	x			2				0			3			

दीपचन्दी ताल (दुगुण)

मात्राएं	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
बोल	धाधिं	ऽधा	धातिं	ऽता	तिंऽ	धाधा	धिंऽ	धाधिं	ऽधा	धातिं	ऽता	तिंऽ	धाधा	धिंऽ
चिन्ह	x			2				0			3			

दीपचन्दी ताल (तिगुण)

मात्राएं	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
बोल	धाधिंऽ	धाधातिं	ऽतातिं	ऽधाधा	धिंऽधा	धिंऽधा	धातिंऽ	तातिंऽ	धाधाधिं	ऽधाधिं	ऽधाधा	तिंऽता	तिंऽधा	धाधिंऽ
चिन्ह	x			2				0			3			

दीपचन्दी ताल (चौगुण)

मात्राएं	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
बोल	धाधिंऽ धा	धातिंऽ ता	तिंऽधा धा	धिंऽधा धिं	ऽधाधा तिं	ऽतातिं ऽ	धाधाधिं ऽ	धाधिंऽ धा	धातिंऽ ता	तिंऽधा धा	धिंऽधा धिं	ऽधाधा तिं	ऽतातिं ऽ	धाधाधिं ऽ
चिन्ह	x			2				0			3			

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

4.1 दीपचंदी ताल मे कितनी मात्राएं होती हैं?

1) 10

2) 14

3) 13

4) 08

4.2 दीपचंदी ताल मे कौन सी मात्रा पर सम होता है?

1) पाँचवीं

2) चौथी

3) पहली

4) कोई नहीं

4.3 दीपचंदी ताल मे कितने मात्रा विभाग हैं?

1) 2

2) 3

3) 4

4) 6

4.4 दीपचंदी ताल मे कितनी खाली होती हैं?

1) पाँच

2) एक

3) दो

4) एक भी नही

4.5 दीपचंदी ताल मे सम को छोड़कर शेष कितनी तालियाँ है?

1) शून्य

2) दो

3) तीन

4) चार

4.4 धमार ताल परिचय

ताल नाम- धमार ताल

मात्राएं- चौदह मात्राएं

वाद्य यंत्र- तबला वाद्य यंत्र का ताल

खाली- एक खाली (आठवीं मात्रा पर)

विभाग- पाँच-दो-तीन-चार मात्राओं के चार मात्रा विभाग

ताली- पहली मात्रा पर सम और छठी एवं ग्यारहवीं मात्राओं पर क्रमशः पहली और दूसरी ताली होती है।

खास विशेषता- इस ताल का प्रयोग भारतीय शास्त्रीय संगीत गायन/वादन मे बहुतायत किया जाता है।

तीन धमार ठाह लय (एकगुण)

मात्राएं	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
बोल	क	धी	ट	धी	ट	धा	ऽ	ग	ती	ट	ती	ट	ता	ऽ
चिन्ह	x					2		0			3			

धमार ताल (दुगुण)

मात्राएं	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
बोल	कधी	टधी	टधा	ऽग	तीट	तीट	ताऽ	कधी	टधी	टधा	ऽग	तीट	तीट	ताऽ
चिन्ह	x					2		0			3			

धमार ताल (तिगुण)

मात्राएं	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
बोल	कधीट	धीटधा	ऽगती	टतीट	ताऽक	धीटधी	टधाऽ	गतीट	तीटता	ऽकधी	टधीट	धाऽग	तीटती	टताऽ
चिन्ह	x					2		0			3			

धमार ताल (चौगुण)

मात्राएं	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
बोल	कधीटधी	टधाऽग	तीटतीट	ताऽकधी	टधीटधा	ऽगतीट	तीटताऽ	कधीटधी	टधाऽग	तीटतीट	ताऽकधी	टधीटधा	ऽगतीट	तीटताऽ
चिन्ह	x					2		0			3			

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

4.6 ताल धमार मे कितनी मात्राएं है?

1 छः

2 सात

3 नौ

4 चौदह

4.7 ताल धमार मे कितने मात्रा विभाग होते हैं?

1 तीन

2 एक

3 चार

4 अन्य

4.8 ताल धमार मे कौन सी मात्रा पर खाली है जिस पर सम भी दिखाया जाता है?

1 पाँचवीं

2 सातवीं

3 दूसरी

4 पहली

4.9 ताल धमार मे सम के अलावा कितनी तालियाँ हैं?

1 तीन

2 एक

3 दो

4 अन्य

4.5 सारांश

दीपचंदी और धमार ताल भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक महत्वपूर्ण विषय है, जिसके बिना अच्छे संगीत की कल्पना भी नहीं की जा सकती। ताल के अभ्यास से शास्त्रीय संगीत मे तैयारी और परिपक्क्वता आती है, जो श्रोताओं को अनायास ही मंत्रमुग्ध करती हैं। शास्त्रीय संगीत मे ताल अभ्यास से संगीतज्ञ के गायन वादन मे रंजकता और परिपक्क्वता आती है। ताल मे पकड़ के साथ किसी भी मात्रा से तान या बंदिश उठाकर सम पर विचित्रता पैदा करते हुए आया जाता है।

4.6 शब्दावली

- ताल (Taal): संगीत में अंकित समय स्तर को ताल कहा जाता है, जो गायन या वादन के साथ समय की गणना करने में मदद करता है।
- लय (Lay): संगीत के समान गति को लय कहते हैं, संगीत में लय अत्यंत महत्पूर्ण हैं, लय के बिना संगीत की कल्पना भी करना असंभव हैं।
- मात्रा (Matra): ताल की इकाई को मात्रा कहते हैं।
- ताली (Taali): सम के अलावा अन्य विभागों की पहली मात्रा पर जहाँ हथेली पर दुसरे हाथ की हथेली के आघात द्वारा ध्वनि उत्पन्न की जाती है, उसे ताली कहते हैं।
- खाली (Khali): ताल देते समय जहाँ विभाग की प्रथम मात्र पर ध्वनि न करके केवल हाथ हिलाकर इशारा कर देते हैं, उसे 'खाली' कहते हैं. अधिकतर खाली ताल के बीच की मात्र अथवा उसके आस पास हीं कहीं पड़ती है।
- विभाग (Vibhag): ताल को कुछ निश्चित मात्राओं में बांटना जिससे भरे एवं खाली जगहों का पता लगे उसे विभाग कहते हैं

4.7 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

4.1 उत्तर: 2

4.2 उत्तर: 3

4.3 उत्तर: 3

4.4 उत्तर: 2

4.5 उत्तर: 2

आत्म-मूल्यांकन प्रश्न 2

4.6 उत्तर: 4

4.7 उत्तर: 3

4.8 उत्तर: 4

4.9 उत्तर: 3

4.8 संदर्भ

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). कर्मिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2002). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2010). राग परिचय (भाग 4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

प्रो. केशव शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. निर्मल सिंह द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

4.9 अनुशंसित पठन

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 2), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (1998). मधुर स्वरलिपि संग्रह. संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

4.10 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. दीपचंदी ताल का परिचय एवं एकगुण लिखिए।

प्रश्न 2. धमार ताल का परिचय एवं एकगुण लिखिए।

प्रश्न 3 दीपचंदी और धमार ताल का परिचय एवं एकगुण लिखिए।

प्रश्न 4. दीपचंदी का परिचय एवं एकगुण और दुगुण लिखिए।

प्रश्न 5. धमार ताल का परिचय एवं एकगुण और दुगुण लिखिए।

प्रश्न 6. दीपचंदी और धमार ताल का परिचय एवं एकगुण और दुगुण लिखिए।

प्रश्न 7. दीपचंदी और धमार ताल का परिचय एवं दीपचंदी की एकगुण और दुगुण लिखिए।

प्रश्न 8. दीपचंदी और धमार ताल का परिचय एवं धमार ताल की एकगुण और दुगुण लिखिए।

प्रश्न 9. दीपचंदी और धमार ताल का परिचय एवं दीपचंदी ताल की एकगुण और तिगुण लिखिए।

प्रश्न 10. दीपचंदी और धमार ताल का परिचय एवं धमार ताल की एकगुण और तिगुण लिखिए।

इकाई-5
त्रिवट, दादरा चतुरंग और निबद्ध गान और अनिबद्ध गान

इकाई की रूपरेखा

5.1	भूमिका
5.2	उद्देश्य
5.3	त्रिवट परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 1
5.4	दादरा गायन शैली परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 2
5.5	चतुरंग गायन शैली परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 3
5.6	निबद्ध गान और अनिबद्ध गान
	स्वयं जांच अभ्यास 4
5.7	सारांश
5.8	शब्दावली
5.9	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
5.10	संदर्भ
5.11	अनुशंसित पठन
5.12	पाठगत प्रश्न

5.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA305 की यह पाँचवीं इकाई है। इस इकाई में संगीत, विशेष रूप से गायन और सितार वाद्य के संदर्भ में, त्रिवट, दादरा चतुरंग और निबद्ध गान और अनिबद्ध गान का अर्थ परिचय और विस्तृत अध्ययन किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। रागों में मधुरता और वैचित्र्य लाने के लिए तथा शास्त्रीय संगीत का आधार दृढ़ करने के लिए आधारभूत विषय आरोह-अवरोह और पकड़ तथा सप्तक विषयों का अध्ययन किया जाता है। इन विषयों के अध्ययन से गायक या वादक को शास्त्रीय संगीत के आधार का ज्ञान होता है और सप्तक के स्वरों का ज्ञान होने से रागों मे प्रयुक्त स्वरों को आरोह अवरोह के तथा पकड़ के आधार पर समझने तथा जानने मे सहायता मिलती है। इसी के साथ त्रिवट, दादरा चतुरंग और निबद्ध गान और अनिबद्ध गान के अध्ययन से गायक या वादक की अच्छी सोच उसकी प्रस्तुति मे सहायक सिद्ध होती है। त्रिवट, दादरा चतुरंग गायन शैलियाँ बहुत ही मधुर गायन शैलियाँ है लेकिन आजकल कम सुनने को मिलती है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी त्रिवट, दादरा चतुरंग और निबद्ध गान और अनिबद्ध गान विषय का अर्थ परिभाषा का विस्तार से अध्ययन कर पाएंगे तथा साथ ही शास्त्रीय संगीत के आधारभूत विषयों मे अपनी पकड़/मजबूती का सकेंगे।

5.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् विद्यार्थी

- त्रिवट, विषय का अर्थ समझ सकेंगे।
- दादरा विषय का अर्थ समझ सकेंगे।
- चतुरंग विषय का अर्थ समझ सकेंगे।

- निबद्ध गान और अनिबद्ध गान विषय का अर्थ समझ सकेंगे।
- निबद्ध गान और अनिबद्ध गान विषय के अर्थ को उदाहरण के द्वारा समझ सकेंगे।

इन उद्देश्यों के माध्यम से, विद्यार्थी न केवल त्रिवट, दादरा चतुरंग और निबद्ध गान और अनिबद्ध गान विषय का अर्थ समझ सकेंगे।के तकनीकी पहलुओं को जान पाएंगे, बल्कि इसके गहरे सांगीतिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक महत्व को भी समझ सकेंगे। इससे उनके संगीत के प्रति दृष्टिकोण में गहराई और समृद्धि आएगी, साथ ही मंच प्रदर्शन मे परिपक्क्वता का अनुभव भी प्राप्त होगा, जो कि उनके भविष्य में सहायक सिद्ध होगा।

5.3 त्रिवट

त्रिवट की रचना पखात्रज का मृदंग के बोलों को स्वर ताल में निबद्ध होने पर होती है। किसी तराने में जब मृदंग के बोलों का प्रयोग किया जाता है तो उसे त्रिवट कहते हैं। इसमें पखावज या मृदंग के बोलों पर राग के गमक आदि अलंकारों की रचना गाई जाती है। गायन मृदंग के बोलों को विभिन्न लयों में गाता है। यही बोल मृदंग पर उसी लय में बजाए जाते हैं। यह शैली स्वर प्रधान तथा लय प्रधान कही जाती है। त्रिवट अधिकतर तीनताल, कहरवा आदि तालों में होते हैं।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

5.1 किसी तराने में जब मृदंग के बोलों का प्रयोग किया जाता है तो उसे क्या कहते हैं?

1 वर्ण

2 त्रिवट

3 चतुरंग

4 तराना

5.4 दादरा गायन शैली

दादरा गीत प्रकार सुगम अंगीत के अंतर्गत आता है। यह गीत प्रकार पूर्ण रूप से शब्द प्रधान है। इसके गीत में तीन से चार तक अंतरे होते हैं। दादरा के गीत का काव्य मौसम से संबंधित रहता है अर्थात इसमें बसंत, सावन आदि का वर्णन

श्रृंगारात्मक रूप से किया जाता है। दादरा गीत 'दादरा' ताल के अतिरिक्त अन्य तालों में भी गाए जाते हैं। इस शैली के लिए पीलू, झिंझोटी, देस आदि राग उपयुक्त माने जाते हैं। इसमें आलाप, तान आदि का प्रयोग नहीं किया जाता है। शब्दों को राग तथा ताल में बांधकर प्रस्तुत करते हैं।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

5.2 दादरा गायन शैली का काव्य संबंधित रहता है?

1) प्रेम

2) मौसम

3) वियोग

4) अन्य

5.3 दादरा गीत 'दादरा' ताल के अतिरिक्त अन्य तालों में भी गाए जाते हैं।

1) हाँ

2) नहीं

3) दोनों

4) कोई नहीं

5.4 दादरा गायन शैली को अधिकतर कौन से रागों मे गाया जाता है?

1) भैरव, आसावरी, भूपाली

2) भीमप्लासी, मारवा, देस

3) पीलू, झिंझोटी, देस

4) कोई नहीं

5.5 दादरा गायन शैली मे किसका प्रयोग नहीं होता है?

1) आलाप और तान

2) झोड़ झाला

3) झाला, मुरकी

4) कोई नहीं

5.5 चतुरंग

चतुरंग शास्त्रीय संगीत का एक विशिष्ट गायन प्रकार है। इसके चार भाग होते हैं, कविता, तराना, त्रिवट, सरगम। जब तराना बोलों में पखावज के बोलों के साथ-साथ साहित्य तथा सरगम का प्रयोग किया जाता है तो उसे चतुरंग कहा जाता है। कविता में गीत के शब्दों को ख्याल अंग से गाकर राग की विशेषताएं बताई जाती हैं। तराने में तराने के शब्दों का प्रयोग होता है। त्रिवट में मृदंग के बोलों को गाया जाता है तथा सरगम में स्वरों को लय में गाते हैं। इसमें तानों का प्रयोग भी किया जाता है।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

5.6 चतुरंग के भाग को पहचानो।

1) मंदा

2) कुमुद्वती

3) कविता

4) कोई नहीं

5.7 चतुरंग के भाग को पहचानो।

1) तराना

2) तीव्रा

3) आयता

4) अन्य

5.8 चतुरंग के भाग को पहचानो।

1) जमजमा

2) कृंतन

3) खेवट

4) त्रिवट

5.9 चतुरंग के भाग को पहचानो।

1) चौतल

2) सरगम

3) पूरिया

4) कोई नहीं

5.6 निबद्ध गान और अनिबद्ध गान

निबद्ध गान- जो गायन ताल में बद्ध हो अर्थात् ताल में बँधी हुई रचनाओं को निबद्ध गान कह कर पुकारा जाता है। प्राचीन काल में निबद्धगान के अन्तर्गत प्रबन्ध, वस्तु, रूपक आदि गायनों के प्रकार प्रचलित थे। परन्तु आधुनिक समय में निबद्ध गान के अन्तर्गत ख्याल, ठुमरी, दादरा, ध्रुपद आदि आते हैं। इन सब प्रकारो को ताल के साथ अर्थात् ताल में बाँधकर गाया या बजाया जाता है, इसलिए ये निबद्ध गान के अन्तर्गत आते हैं।

अनिबद्ध गान-जो गायन बिना ताल के गाया अथवा बजाया जाता है, अनिबद्ध गान कहलाता है। अर्थात् ताल- रहित रचनाएँ अनिबद्ध गान के अन्तर्गत आती हैं। प्राचीनकाल में अनिबद्ध गान के प्रकार रागालाप, रूपकालाप, आलप्ति गान आदि प्रचलित थे। आधुनिक समय में अनिबद्ध गान के अन्तर्गत आलाप गायन प्रचलित है, जो राग के गीत गाने के पूर्व गाया अथवा बजाया जाता है। हिमाचल लोक संगीत मे झूरी गायन अनिबद्ध संगीत का उदाहरण है। झूरी गायन मे गीत ताल मे शुरू होता है, लेकिन गाने के बीच मे नायक और नायिका का जब संगीतमय वार्तालाप होता होता है तो उस समय ताल वाद्य नहीं बजाए जाते हैं।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

5.10 आलाप क्या है?

1) निबद्ध

2) अनिबद्ध

3) एक और दो दोनों

4) कोई नहीं

5.11 झाला क्या है?

1) निबद्ध

2) अनिबद्ध

3) एक और दो दोनों

4) कोई नहीं

5.12 बड़ा ख्याल क्या है?

1) निबद्ध

2) अनिबद्ध

3) एक और दो दोनों

4) कोई नहीं

5.13 हिमाचली लोक संगीत मे झुरी गायन के समय जो नायक और नायिका के मध्य सवाल-जवाब होते है वे क्या है?

1) निबद्ध

2) अनिबद्ध

3) एक और दो दोनों

4) कोई नहीं

5.14 द्रुत गत क्या है?

1) निबद्ध

2) अनिबद्ध

3) एक और दो दोनों

4) कोई नहीं

5.7 सारांश

त्रिवट, दादरा चतुरंग और निबद्ध गान और अनिबद्ध गान भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक महत्वपूर्ण विषय है, जिसके बिना अच्छे संगीत की कल्पना भी नहीं की जा सकती। अलंकारों के अभ्यास से शास्त्रीय संगीत के आधार मे मजबूती, तैयारी और परिपक्क्वता आती है, जो श्रोताओं को अनायास ही मंत्रमुग्ध करती हैं। शास्त्रीय संगीत मे त्रिवट, दादरा चतुरंग और निबद्ध गान और अनिबद्ध गान के अध्ययन और अपने प्रयोगात्मक पक्ष मे मधुरता और रंजकता आती है, जो श्रोता को अनायास ही सम्मोहित करती है।

5.8 शब्दावली

- अलंकार (Alankar): सप्तक के स्वरों से ही अलंकार बनाए जाते है। जिस प्रकार एक स्त्री सुन्दर दिखने के लिए आभूषणों से खुद को सजाती है वही स्थान संगीत मे अलंकार का है।
- राग (Raga): संगीत का एक विशेष संरचनात्मक पद्धति, जो स्वरों के विशेष क्रम का उपयोग करके भावनात्मक और मनोरंजन को व्यक्त करता है।
- ताल (Taal): सप्तक के स्वरों को जब अलंकारों के रूप मे यार राग मे तानों या तोड़ों के रूप मे ताल के साथ बजाया जाता है तो श्रोता उसे सुनकर अनायास ही मंत्रमुग्ध हो जाता है। संगीत में अंकित समय स्तर को ताल कहा जाता है, जो गायन या वादन के साथ समय की गणना करने में मदद करता है।
- लय (Lay): संगीत में गति या चलन को लय कहा जाता है, जो ताल की गति को निर्दिष्ट करता है।
- रागिनी (Ragini): रागों की सहायक संगीत पद्धति जिसमें संगीत रागों के विभिन्न अनुभवों और भावों को व्यक्त करने के लिए मेलोडी और ताल का उपयोग किया जाता है।
- श्रुति (Shruti): संगीत में सबसे छोटे स्वर को श्रुति कहा जाता है, जो स्वर स्थान पर किसी भी विस्तार में पाया जा सकता है। श्रुतियों से ही सप्तक के स्वरों का निर्माण हुआ है।

- स्वर (Swar): संगीत में विभिन्न ऊर्जाओं को स्थान देने वाले तारों को स्वर कहा जाता है, जो संगीत के मूल भाग हैं।
- मेलोडी (Melody): संगीत में स्वरों के विशेष क्रम का एक संरचित और आकर्षक संयोजन, जिससे एक गाना या संगीत कविता का निर्माण होता है।

5.9 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1 प्रश्नों के उत्तर

5.1) उत्तर: 2

स्वयं जांच अभ्यास 2 प्रश्नों के उत्तर

5.2) उत्तर: 2

5.3) उत्तर: 1

5.4) उत्तर: 3

5.5) उत्तर: 1

स्वयं जांच अभ्यास 3 प्रश्नों के उत्तर

5.6) उत्तर: 3

5.7) उत्तर: 1

5.8) उत्तर: 4

5.9) उत्तर: 2

स्वयं जांच अभ्यास 4 प्रश्नों के उत्तर

5.10) उत्तर: 2

5.11) उत्तर: 1

5.12) उत्तर: 1

5.13) उत्तर: 2

5.14) उत्तर: 1

5.10 संदर्भ

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). कर्मिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2010). राग परिचय (भाग 4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

प्रो. केशव शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. निर्मल सिंह द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

5.11 अनुशंसित पठन

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 2), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (1998). मधुर स्वरलिपि संग्रह. संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

5.12 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. त्रिवट का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. दादरा का परिचय लिखिए।

प्रश्न 3. चतुरंग का परिचय लिखिए।

प्रश्न 4.. निबद्ध गान और अनिबद्ध गान का परिचय लिखिए।

प्रश्न 5. त्रिवट और दादरा का परिचय लिखिए।

प्रश्न 6. चतुरंग और निबद्ध गान और अनिबद्ध गान का परिचय लिखिए।

प्रश्न 7. चतुरंग और दादरा का परिचय लिखिए।

प्रश्न 8. त्रिवट और निबद्ध गान और अनिबद्ध गान का परिचय लिखिए।

इकाई-6
थाट और स्थाय

इकाई की रूपरेखा

6.1	भूमिका
6.2	उद्देश्य
6.3	थाट परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 1
6.4	स्थाय परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 2
6.5	सारांश
6.6	शब्दावली
6.7	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
6.8	संदर्भ
6.9	अनुशंसित पठन
6.10	पाठगत प्रश्न

6.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA305 की यह छठी इकाई है। इस इकाई में संगीत, विशेष रूप से गायन और सितार वाद्य के संदर्भ में, थाट और स्थाय का अर्थ परिचय और विस्तृत अध्ययन किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। रागों में मधुरता और वैचित्र्य लाने के लिए अलंकारों का अभ्यास किया जाता है। अलंकारों के अभ्यास से गायक की आवाज मे परिपक्क्वता और वादक के वादन मे मधुरता और तैयारी साफ झलकती है। अगर अलंकार किसी भी थाट मे गाए या बजाए जाएं तो कोई भी राग बहुत ही सरलता और तैयारी के साथ प्रस्तुत किया जा सकेगा। राग मे ऐसे स्वर समुदाय जिन्हें स्थाय कहते हैं, का अभ्यास किया जाए तो प्रस्तुति मे चार चाँद लग जाते है

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी थाट और स्थाय विषय का अर्थ परिभाषा और थाट और स्थाय के प्रकार और रूपों के बारे मे विस्तार से अध्ययन कर पाएंगे तथा साथ ही सितार वादन पर रागों और स्थायों के माध्यम से अपने वादन मे मधुरता ला सकेंगे। विद्यार्थी इस विषय के अध्ययन के पश्चात स्वयं अलंकार बनाने मे समर्थ हो सकेंगे।

6.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् विद्यार्थी

- थाट विषय का अर्थ समझ सकेंगे।
- थाट के प्रकारों को समझ सकेंगे।
- स्वयं थाटों के आधार पर रचना कर सकेंगे।

- सितार वाद्य पर स्वयं रचित थाटों के ऊपर आधारित रचना का अभ्यास कर पाएंगे, जिससे उनके वादन मे निखार आएगा।
- स्थाय विषय का अर्थ समझ सकेंगे।
- स्थाय के प्रकारों को समझ सकेंगे।

इन उद्देश्यों के माध्यम से, विद्यार्थी न केवल थाट और स्थाय के तकनीकी पहलुओं को जान पाएंगे, बल्कि इसके गहरे सांगीतिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक महत्व को भी समझ सकेंगे। इससे उनके संगीत के प्रति दृष्टिकोण में गहराई और समृद्धि आएगी, साथ ही मंच प्रदर्शन मे परिपक्क्वता का अनुभव भी प्राप्त होगा, जो कि उनके भविष्य में सहायक सिद्ध होगा।

6.3 थाट

प्राचीन समय से ही रागों को वगीकृत करने की प्रथा चली आ रही है। ऐसा माना जाता है कि विभिन्न वर्गों विभाजित करने से किसी विषय को स्पष्ट ढंग से समझा जा सकता हैं। किसी कारण से रागों का भी वर्गीकरण किया गया। प्राचीन समय से ही रागों को अलग-अलग ढंग से वर्गीकृत किया गया, जैसे-जाति के आधार पर, राग-रागिनी वर्गीकरण, मेल या थाट के आधार पर। साधारण बोलचाल की भाषा में थाट का अर्थ है ढाँचा। जिस प्रकार झोंपड़ी बनाने के लिए बाँस आदि का ढाँचा तैयार करके ही मकान बनाया जाता है, उसी प्रकार तंत्री वाद्य के दंड पर बंधे परदों को किसी राग के लिए आगे-पीछे सरकाकर जो एक ढाँचा तैयार होता है उसे थाट कहा जाता है। थाट सितार वादकों द्वारा प्रयोग होने वाली एक व्यवस्था थी, जिसे उपयोगी मानकर राग वर्गीकरण के रूप में स्वीकार कर लिया गया। हिन्दुस्तानी संगीत में रागों की आवश्यकता के अनुसार कई थाटों की संख्या घटती-बढ़ती रही। परन्तु थाट पद्धति को व्यवस्थित करने का कार्य पं. भातखण्डे जी ने किया तथा गणित के आधार पर 32 थाट माने। इन 32 थाटों में से केवल 10 थाट ही लिए गए। सप्तक के 12 स्वर स्थानों मे से किन्हीं सार स्वरों के ढांचे को थाट कहते हैं। एक थाट मे जैसे स्वर लगते हैं, उसी प्रकार के स्वरों वाले राग उस थाट के अंतर्गत आते हैं। थाट के निम्न लक्षण माने गये हैं-

(1) प्रत्येक थाट में कम से कम तथा अधिक से अधिक सात स्वर ही होने चाहिए।

(2) थाट को गाया-बजाया नहीं जाता है।

(3) थाट में अवरोह नहीं होता है।

(4) थाट में एक स्वर का केवल एक ही रूप प्रयुक्त होता है। स्वर के दो रूप (कोमल तथा शुद्ध) एक साथ नहीं आते हैं।

व्यंकटमुखी जी द्वारा थाट प्रमुख दस माने गए हैं। इनके नाम तथा स्वर निम्न प्रकार से हैं

क्रम संख्या	**थाट**	**स्वर**
1	थाट बिलावल	सभी स्वर शुद्ध
2	थाट कल्याण	म स्वर तीव्र
3	थाट खमाज	नि स्वर कोमल
4	थाट काफी	ग और नि स्वर कोमल
5	थाट मारवा	रे स्वर कोमल और म स्वर तीव्र
6	थाट भैरव	रे और ध स्वर कोमल
7	थाट भैरवी	सभी स्वर कोमल (रे ग ध नि कोमल)
8	थाट पूर्वी	रे ध स्वर कोमल और म तीव्र
9	थाट तोड़ी	रे ग ध स्वर कोमल और म तीव्र
10	थाट असावरी	ग ध नि कोमल।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

6.1 10 थाट पद्धति किसकी देन है?

1) पूलुस्कर

2) पंडित भातखंडे

3) व्यंकटमखी

4) शारंग देव

6.2 थाट मे कम से कम और ज्यादा से ज्यादा कितने स्वर अनिवार्य हैं?

1) छः

2) पाँच

3) चार

4) सात

5) कोई नहीं

6.3 थाट को .... जाता है ?

1) गाया

2) बजाया

3) 1 और 2

4) कोई नहीं

6.4 इनमे से कौन सा थाट नहीं हैं?

1) कल्याण

2) भैरव

3) रुपक

4) भैरवी

6.5 इनमे से कौन सा थाट हैं?

1) कल्याण

2) पंचम

3) रुपक

4) सिंध भैरवी

6.4 स्थाय

राग के विस्तार में 'स्थाय' का महत्वपूर्ण स्थान है। छोटे संगीतमय स्वर समुदायों को स्थाय कहा जाता है। पंडित शारंगदेव ने राग के घटक के रूप में स्थाय को इस प्रकार परिभाषित किया है:

रागस्यवयः स्थायो।

स्थाय के लक्षणों की चर्चा करते हुए पार्श्वदेव ने कहा है कि स्थाय के चार लक्षण हैं- स्थान, तान, गमक और मान। स्थाय का महत्त्व बताते हुए पार्श्वदेव कहते हैं मी का स्थाय एक जैसा नहीं होता। जिस प्रकार मोर का -न रंग-बिरंगा कंठ मनमोहक एवं विचित्र होता है, उसी प्रकार की स्थाय भी अनेक प्रकारों से विकृत प्रतीत होता है। कि-राग स्थाय स्वरों का ऐसा अवयव है जो कि राग का तथा में स्वर-सौन्दर्य का परिचायक होता है। यहाँ अवयव का अर्थ है, स्वरों के ऐसे समूह से है जो कि राग को व्यक्त करने की मूह क्षमता रखता हो। अतः स्थाय राग को व्यक्त करने वाले रों छोटे-छोटे स्वर समुदाय होते हैं। स्थायों के कारण ही राग को आसानी से पहचान लिया जाता है, जबकि एक राम

से भिन्न-भिन्न कलाकारों द्वारा भिन्न-भिन्न भाव को व्यक्त में करते हैं। लय, भाव और प्रदर्शन में विविधता होने पर भी राग की पहचान स्थाय द्वारा होती है। स्थाय के स्वरूप कभी असीमित हैं और इसमें वैचित्र्य तथा सौन्दर्य उत्पन्न करने कारी की अत्यधिक क्षमता होती है, क्योंकि यह चार लक्षणों को स्थान, तान, गमक और मान से विभूषित हैं। इस प्रकार जैसे स्थाय के दो कार्य हैं-एक तो राग के व्यक्तित्व की पहचान दि। कराना और दूसरा स्वर श्रृंगार द्वारा संगीत में सौन्दर्यानुभूति ही कराना। सन्निवेश और रंजकता। स्थाय में ये दोनों पहलू विद्यमान ली रहते हैं। एक ओर स्थाय राग-रूप की स्थापना कर राम -या का परिचय देते हैं और दूसरी ओर विविध स्वर, सन्निवेशों ब्ल' द्वारा रंजकता पैदा करते हैं। अतः राग में भावाभिव्यक्ति के के लिए स्थाय बहुत ही महत्त्वपूर्ण है।

पंडित शारंगदेव ने 96 प्रकार के स्थाय बताए हैं, जिन्हें प्रसिद्ध, अज्ञात और मिश्रित के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है। पार्श्वदेव ने 92 स्थाय-प्रकार बताए हैं और महाराणा कुम्भा ने 66 स्थाय-प्रकार बताए हैं।

डा० प्रेमलता शर्मा ने पं० शारंगदेव द्वारा दिए गए 96 प्रकारों को निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया है-

1. क्रम के आधार पर - इसके अन्तर्गत वे सभी स्थाय आ जाते हैं जो आरोह और अवरोह क्रम की गतियों पर है। आधारित होते हैं। जैसे- उल्लसित। अर्थात् स्वरों का तीव्र गति से आरोहन करना। उदाहरणार्थ- ध नी सरे ग रे सा

2. तीव्रता के आधार पर- इसके अन्तर्गत वे सभी स्थाय आ जाते हैं जिनका संबंध नाद की तीव्रता से है। अर्थात् स्वर प्रयोग में कोमल, तीव्र, मधुर आदि भावों को कहा व्यक्त करना। जैसे- आक्रमण स्थाय में स्वरों पर तीर और शक्ति से आघात करना अथवा उच्चारण करना, निर्जवनियाका अर्थ है कि सीधे स्वरों का उच्चारण करते समय ध्वनि स को धीरे-धीरे मधुर करना।

3. समय के आधार पर- इसके अन्तर्गत वे सभी उ स्थाय आ जाते हैं, जिनका प्रायोगिक लक्षण काल है। र अर्थात् स्वरों पर दीर्घ काल अथवा संक्षिप्त काल के लिए प ठहरना अथवा उच्चारण करना। जैसे-दीर्घ कम्पित आदि।

4. छवि के आधार पर- इसके अन्तर्गत उन स्थायों क का समावेश किया गया है जो कि मानसिक स्थल पर कारण किसी छवि, आकृति अथवा इन्द्रजाल का निरूपण करते हैं। प्र जैसे-तरगित का अर्थ है कि लहरों के समान चाल में स्वरों का प्रयोग करना। नी रे रे ग ग म म ध् धनी नी सं। व प्रतिग्राहोल्या का अर्थ है कि गेंद की भाँति स्वरों का उछाल कर पकड़ना। सममग, गध धम, मनीनीध।

इसी प्रकार हम देखते हैं कि स्थायों में भावों की चार सुन्दरता को व्यक्त करने की अत्यधिक क्षमता हैं। यह स्थाय राग के सौन्दर्य को निखारने और गायन अथवा वादन को भावशाली बनाने के लिए महत्त्वपूर्ण हैं। स्थाय के साद विभिन्न प्रकारों का प्रयोग हमारे आधुनिक गीत प्रकारों में होता है। चाहे कलाकार उनके नाम या संज्ञा से परिचित हों हो अथवा नहीं। स्थाय की रचना तान, स्थान, गमक और मान पहलू के आधार पर होने से इनमें भावाभिव्यक्ति की क्षमता बहुत अधिक है जो कि मानव को आनन्दानुभूति के सर्वोत्तम स्तर तक ले जा सकता है।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

6.6 छोटे संगीतमय स्वर समुदायों को क्या कहा जाता है।

1) वर्ण

2) स्थाय

3) नाद

4) अंतरा

6.7 शारंगदेव ने कितने स्थाय माने?

1) 10

2) 90

3) 96

4) कोली नहीं

6.8 पार्श्व देव ने कितने स्थाय माने?

1) 11

2) 80

3) 67

4) 92

6.9 महाराणा कुंभा ने कितने स्थाय माने?

1) 66

2) 80

3) 67

4) 92

6.10 डा० प्रेमलता शर्मा ने पं० शारंगदेव द्वारा दिए गए 96 प्रकारों को कितने प्रकार से वर्गीकृत किया है?

1) एक

2)पाँच

3) चार

4) अन्य

6.5 सारांश

थाट और स्थाय भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक महत्वपूर्ण विषय है, जिसके बिना अच्छे संगीत की कल्पना भी नहीं की जा सकती। थाट और स्थाय के अभ्यास से शास्त्रीय संगीत मे तैयारी और परिपक्क्वता आती है, जो श्रोताओं को अनायास ही मंत्रमुग्ध करती हैं। शास्त्रीय संगीत मे थाट पर आधारित अलंकारों या किसी रचना के अभ्यास से संगीतज्ञ के गायन वादन मे रंजकता और परिपक्क्वता आती है।

6.6 शब्दावली

- अलंकार (Alankar): जिस प्रकार एक स्त्री सुन्दर दिखने के लिए आभूषणों से खुद को सजाती है वही स्थान संगीत मे अलंकार का है।
- राग (Raga): संगीत का एक विशेष संरचनात्मक पद्धति, जो स्वरों के विशेष क्रम का उपयोग करके भावनात्मक और मनोरंजन को व्यक्त करता है।
- ताल (Taal): संगीत में अंकित समय स्तर को ताल कहा जाता है, जो गायन या वादन के साथ समय की गणना करने में मदद करता है।
- लय (Lay): संगीत में गति या चलन को लय कहा जाता है, जो ताल की गति को निर्दिष्ट करता है।
- रागिनी (Ragini): रागों की सहायक संगीत पद्धति जिसमें संगीत रागों के विभिन्न अनुभवों और भावों को व्यक्त करने के लिए मेलोडी और ताल का उपयोग किया जाता है।
- श्रुति (Shruti): संगीत में सबसे छोटे स्वर को श्रुति कहा जाता है, जो स्वर स्थान पर किसी भी विस्तार में पाया जा सकता है।

- स्वर (Swar): संगीत में विभिन्न ऊर्जाओं को स्थान देने वाले तारों को स्वर कहा जाता है, जो संगीत के मूल भाग हैं।
- मेलोडी (Melody): संगीत में स्वरों के विशेष क्रम का एक संरचित और आकर्षक संयोजन, जिससे एक गाना या संगीत कविता का निर्माण होता है।

6.7 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

आत्म-मूल्यांकन प्रश्न 1

6.1 उत्तर: 2

6.2 उत्तर: 4

6.3 उत्तर: 4

6.4 उत्तर: 3

6.5 उत्तर: 1

आत्म-मूल्यांकन प्रश्न 2

6.6 उत्तर: 2

6.7 उत्तर: 3

6.8 उत्तर:4

6.9 उत्तर: 1

6.10 उत्तर: 3

6.8 संदर्भ

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). कर्मिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2010). राग परिचय (भाग 4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

प्रो. केशव शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. निर्मल सिंह द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

6.9 अनुशंसित पठन

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 2), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (1998). मधुर स्वरलिपि संग्रह. संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

6.10 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. थाट का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. थाट का परिचय और 10 थाटों का विस्तार सहित वर्णन करें।

प्रश्न 3. स्थाय का अर्थ एवं परिभाषा लिखिए।

प्रश्न 4. स्थाय का अर्थ, परिभाषा एवं इसके प्रकारों का विस्तार से वर्णन करें।

प्रश्न 5. थाट और स्थाय का अर्थ परिभाषा एवं थाट के प्रकारों का विस्तार से वर्णन करें।

प्रश्न 5. थाट और स्थाय का अर्थ परिभाषा एवं स्थाय के प्रकारों का विस्तार से वर्णन करें।

इकाई-7
घराना

इकाई की रूपरेखा

7.1	भूमिका
7.2	उद्देश्य
7.3	घराना (गायन) परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 1
7.4	घराना (सितार)
	स्वयं जांच अभ्यास 2
7.5	सारांश
7.6	शब्दावली
7.7	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
7.8	संदर्भ
7.9	अनुशंसित पठन
7.10	पाठगत प्रश्न

7.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA305 की यह सातवीं इकाई है। इस इकाई में संगीत, विशेष रूप से गायन और सितार वाद्य के संदर्भ में, घराना (गायन और सितार) का अर्थ परिचय और विस्तृत अध्ययन किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। हरेक कलाकार का राग प्रस्तुतीकरण अलग अलग होता है क्यूंकि अलग-अलग घरानों से सीखे हुए कलाकार की प्रस्तुति मे अंतर होता है। हरेक घराने के की अपनी अलग अलग विशेषता होती है। प्रदर्शन करते समय कलाकार अपने घराने के अनुरूप ही अलग-अलग तकनीकों का प्रयोग कर श्रोताओं को प्रससंचित और मंत्रमुग्ध कर पाता है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी घराना (गायन और सितार) विषय का अर्थ परिभाषा का विस्तार से अध्ययन कर पाएंगे तथा साथ ही शास्त्रीय संगीत के आधारभूत विषयों मे अपनी पकड़/मजबूती का सकेंगे।

7.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् विद्यार्थी

- घराना शब्द का अर्थ समझ सकेंगे।
- घराने के अर्थ के साथ इसके प्रकारों को समझ सकेंगे।
- घराने के अर्थ के साथ गायन के घराने के प्रकारों को समझ सकेंगे।
- घराने के अर्थ के साथ सितार के घराने के प्रकारों को समझ सकेंगे।

इन उद्देश्यों के माध्यम से, विद्यार्थी न केवल घराना (गायन और सितार) के तकनीकी पहलुओं को जान पाएंगे, बल्कि इसके गहरे सांगीतिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक महत्व को भी समझ सकेंगे। इससे उनके संगीत के प्रति दृष्टिकोण में गहराई और समृद्धि आएगी, साथ ही मंच प्रदर्शन मे परिपक्क्वता का अनुभव भी प्राप्त होगा, जो कि उनके भविष्य में सहायक सिद्ध होगा।

7.3 गायन के घराने परिचय

भारतीय संगीत की विशेषता यह है कि इस कला में कलाकार को अपनी योग्यता दिखाने का पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त है। गायक अपनी इच्छानुसार राग के नियमों का पालन करता हुआ, गीत को बन्दिश को सुमधुर बनाता है, विभिन्न आलाप तानों की रचना करता है, अलंकारों तथा लयकारियों के चमत्कार से श्रोताओं का मन मोहित करता है। गायन के अनेक घराने होने के कारण गायन-प्रणाली की स्वतन्त्रता है, क्योंकि जिस गायक ने गायन की एक नयी प्रणाली अपना लो, वही उसका एक घराना बन गया। अनेक गायक ऐसे हो गये हैं जिन्होंने अपनी गायन प्रतिभा से गायन की एक नयी स्वतन्त्र शैली को अपनाया और उसी शैली का अनुकरण उनके कुटुम्बी तथा शिष्यगण करते रहे। इसीलिए यह स्पष्ट है कि यहाँ घरानों का अर्थ गायन को विभिन्न शैलियों से है। गायन की विभिन्न शैलियों का जो परम्परागत प्रादुर्भाव हुआ है, उन्हीं को घराने के नाम से पुकारा जाता है। अनेक घरानों के राग समान हुआ करते हैं, परन्तु उनके गाने का ढंग अलग-अलग है। राग को गाने के ढंग को शैली कहते हैं और यही शैली अलग-अलग घरानों में अलग-अलग हुआ करती है। शैली में निम्नलिखित बातों को समझना चाहिए :-

1- गीत की बन्दिश

2 - आवाज लगाने का ढंग

3- राग- विस्तार अथवा आलापचारी

4-तानों तथा बोलतानों का प्रयोग

5- ताल एवं लयकारी

6- रागों की पसन्दगी।

नीचे शैली की इन विशेषताओं का वर्णन ख्याल, ठुमरी तथा ध्रुपद के विभिन्न घरानों के साथ दिया जाता है।

ख्याल गायन - विद्वानों का मत है कि ख्याल गायन अमीर खुसरो के समय से प्रारम्भ हुआ। खुसरो को ही छोटे ख्याल (कव्वाली ख्याल) का जन्मदाता माना जाता है। जौनपुर के सुल्तान हुसैन शर्की ने इस गायन को लोकप्रिय बनाने में बहुत प्रयत्न किया और ख्याल की रचनाएँ की। इन्हें विलम्बित ख्याल का आविष्कारक माना जाता है। आधुनिक ख्याल गायन की लोकप्रियता का श्रेय सदारंग और अदारंग को प्राप्त है।

संगीत सम्राट् तानसेन के बाद दो घरानों का जन्म हुआ। तानसेन के पुत्रों के वंशज "सेनिये" कहलाये तथा तानसेन को लड़की के वंशज "बानिये" कहलाये । कहते हैं कि इन्हीं दो घरानों ने ख्याल गायन के विभिन्न घरानों को जन्म दिया ।

ख्याल गायकों के आधुनिक समय में मुख्य-मुख्य घराने इस प्रकार हैं :-

1) ग्वालियर घराना

स्वर्गीय नत्थन पीरबख्य (हद्दू, हस्सू खाँ के दादा) को इस घराने का जन्मदाता माना जाता है। उनके दो पुत्र कादिर बख्श और पीरबख्श थे, जिनमें कादिरबख्श तो ग्वालियर नरेश स्वर्गीय दौलतराव जी के यहाँ नौकर थे तथा पीरबख्श ग्वालियर नरेश जनको जी महाराज के वहाँ थे। कादिरबख्श के तीन पुत्र हद्दू, हस्सू और नत्थू खाँ थे। नत्थ खाँ को उनके चाचा पीरबख्य ने गोद ले लिया था। ये तीनों भाई प्रसिद्ध तबलिये तथा ग्वालियर के दरबारी उस्ताद थे।

हस्सू खाँ- हस्सू र्खा के पुत्र गुले इमाम खाँ तथा गुले इमाम के पुत्र मेंहदी हुसेन खाँ थे। मेंहदी हुसेन खाँ 'तोड़ी' राग गाने में अपनी जोड़ी नहीं रखते थे। इस परम्परा के महाराष्ट्रीय शिष्य बालकृष्ण, बुआ इचलकरंजीकर, बासुदेव जोशी, बाबा दीक्षित (नीलकण्ठ) थे । बालकृष्ण बुआ के शिष्य पं० विष्णु दिगम्बर पलुष्कर थे, जिन्होंने बम्बई जाकर ग्वालियर घराने का प्रचार किया। आजकल पं० विनायक राव पटवर्धन, ओंकार नाथ ठाकुर, नारायण राव व्यास इत्यादि इसी परम्परा के गायक रहे हैं।

हदू खाँ इनके दो पुत्र रहमत खाँ और मुहम्मद खाँ थे । शिष्यों में इन्दौर के रामभाऊ, तथा विष्णुपत छत्रे प्रमुख थे ।

नत्थू खाँ - नत्थू खाँ ग्वालियर नरेश जियाजी राव शिन्दे के गुरु थे। इनके दत्तक पुत्र उस्ताद निसार हुसैन खाँ थे । चित्र द्वारा ग्वालियर घराने को हम निम्न प्रकार से रामझ सकते हैं:-

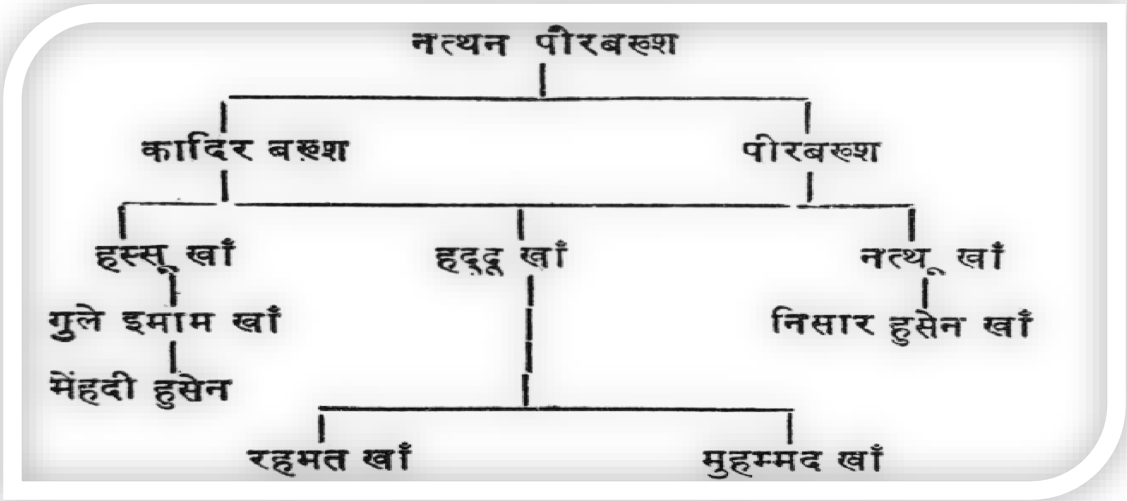

नत्थू खाँ के कोई बालक नहीं था। इससे इन्होंने अपने साथी के लड़के निसार हुसेन को गोद ले लिया था। निसार हुसेन नत्थू खाँ से शिक्षा पायी थी । नत्थू खाँ के बाद ग्वालियर महाराज ने निसार हुसेन को अपने दरबार में रखा । निसार हुसेन ने अत्यन्त मेहनत तथा अभ्यास के बाद किसी खास प्रकार की तान पर सिद्धि पायी थी, जिसे लोग "हाथी का चीत्कार" तथा "पहिया धसेक" आदि नामों से पुकारते थे। इनको शिष्य परम्परा इस प्रकार है- शंकर राव, पण्डित भाऊ राव जोशी, शंकर राव हरकर, पं० रामकृष्ण बझे इत्यादि । शंकर राव पण्डित के पुत्र कृष्णराव पण्डित हैं तथा शिष्य श्री राजा भैया पूंछवाले । रामपुर के प्रसिद्ध उस्ताद मुस्ताक हुसेन भी इसी घराने के गायक थे।

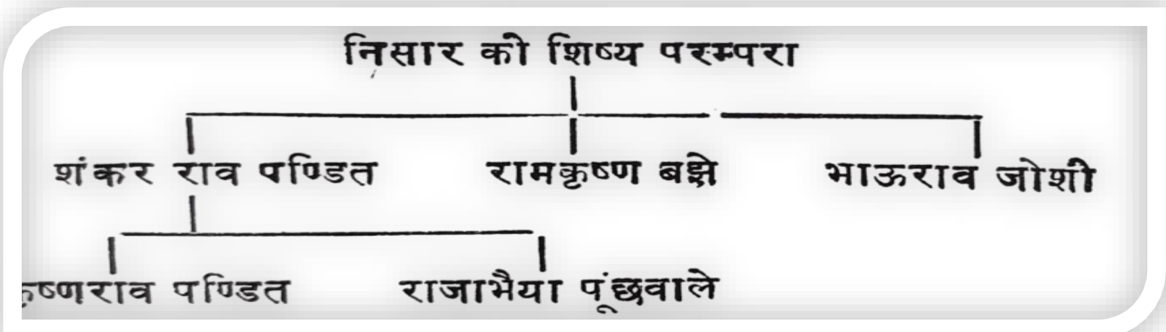

ग्वालियर घराने की गायन शैली की प्रमुख विशेषताएँ -

1- ध्रुपद अंग के ख्याल २- जोरदार तथा खुली आवाज का गायन ३- आलापों का एक विशेष ढंग जिसे 'बहलावा' कहकर पुकारते हैं तथा यह गीतों के विस्तार में प्रयोग किया जाता है ४- गमकों का विशेष प्रयोग ५-सीधी तथा सपाट तान का प्रयोग, जटिल तथा अवरोह प्रधान तानें भी प्रयोग की जाती है ६-बोल तानों में लयकारी का सुन्दर प्रयोग।

2-आगरा घराना

आगरा घराने का ग्वालियर घराने से विशेष सम्बन्ध है, इसलिए बहुत-सी बातें आपस में मिलती-जुलती हैं। इस घराने के प्रवर्तक हाजी सुजान साहब तानसेन के दामाद थे। आगे चलकर इस घराने का प्रचार घग्गे खुदाबख्श द्वारा हुआ। घग्गे खुदाबख्श ग्वालियर ने नत्थन पीरबख्श (हस्सू, हद्द, नत्थू खाँ के दामाद) के शिष्य बन गये थे और उनसे ही उन्होंने ख्याल गायकी की शिक्षा प्राप्त की है। इस प्रकार ग्वालियर घराने का आगरा से अटूट सम्बन्ध हो गया था। खुदाबख्श और जग्गू खाँ भाई-भाई थे। जग्गु खाँ के पौत्र नत्थन की संगीत शिक्षा घग्गे खुदाबख्श के पुत्र गुलाम खाँ से प्राप्त हुई। गुलाम अब्बास खाँ स्व० उस्ताद फैयाज खाँ के नाना थे। फैयाज खाँ आगरा घराने के रत्न माने जाते थे। नत्थन खाँ की गायकी का प्रभाव फैयाज खाँ पर पड़ा। फैयाज खाँ के शिष्यों में शराफत हुसैन और लताफत हुसैन प्रमुख थे, जो आगरा घराने का प्रति- निधित्व कर रहे थे। नत्थन पीरबख्श के पुत्र विलायत हुसैन के विचार हैं कि इस घराने के प्रवर्तक मनरंग थे। मुहम्मद अली खाँ मनरंग के वंशज माने जाते हैं। इनके पुत्र प्रसिद्ध संगीतज्ञ आशिक अली खाँ थे। इस घराने की विशेषताएँ इस प्रकार थीं-

a)- गीत को संक्षिप्त बन्दिश

b)-वक्र तानें, आलापों को छोटी- छोटी तानों से बढ़त

c)- आवाज बनाने का अपना ढङ्ग

d)-खुली आवाज का गायन इत्यादि।

3- दिल्ली घराना

मुगल शासन के पतन के बाद इस घराने के जन्मदाता तानरस खाँ को माना जाता है। आपके पुत्र उमराव खाँ ने दिल्लो घराने को आगे बढ़ाया । पटियाला घराना के प्रसिद्ध उस्ताद अलैया तथा फत्ते अली खाँ साहब ने उस्ताद तानरस खाँ साहब से संगीत सीखा। दिल्ली घराने के अन्तिम प्रतिनिधि के रूप में उस्ताद चाँद खाँ साहब का नाम जाना जाता है। दिल्ली घराने की प्रमुख विशेषताएँ तानों में निरालापन, ख्याल की कलापूर्ण बन्दिश, द्रुत लय में बोलतानों का प्रयोग तथा तैयारी ।

4- जयपुर घराना

डेढ़ शताब्दी पूर्व इस घराने का जन्म मुहम्मद अली खाँ द्वारा हुआ। कुछ लोगों के मतानुसार इस घराने का प्रवर्तक मनरंग को मानते हैं। मुहम्मद अली इनके वंशज माने जाते हैं। प्रसिद्ध संगीतज्ञ आशिक अली खाँ इनके पुत्र थे । आशिक अली खाँ साहब पहले गाना गातें थे, बाद में सितार बजाने लगे। आपके शिष्यों में मुश्ताक अली, जी० एन० गोस्वामी, रसूलन बाई तथा अनवरी बेगम का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। इस घराने की विशेषताओं में खुली आवाज का गायन, वक्र तानें तथा छोटी-छोटी तानों से आलाप की बढ़त, गौत की बन्दिश तथा स्वरों के सौन्दर्य को प्राथमिकता दी जाती है।

5- पटियाला घराना

इस घराने को अलीबख्श तथा फत्तेअली दो भाइयों ने चलाया। दोनों भाई संगीत जगत् में अलैया और फत्ते के नाम से प्रसिद्ध हैं। कुछ लोगों का विचार है कि इस घराने के प्रवर्तक बड़े मियाँ कालू खाँ जो इन दोनों भाइयों के पिता थे। इन दोनों भाइयों के जयपुर घराने की प्रसिद्ध गायिका गोरखी बाई, वैराम खाँ तथा तानरस खाँ (दिल्ली घराने के उस्ताद) से शिक्षा प्राप्त की थी और इस प्रकार एक नये तथा स्वतन्त्र घराने को जन्म दिया, जो पटियाला घराना कहलाता है। अभी तक इस घराने का प्रतिनिधित्व बड़े गुलाम अली खाँ साह्य कर रहे थे। बड़े गुलाम अली खाँ के पिता नजीबख्श और चाचा कालै खाँ ने बड़े मियाँ कालू खाँ से शिक्षा पायी थी। काले खाँ को फत्ते अली द्वारा भी शिक्षा मिली थी तथा बड़े गुलाम अली खां ने अपने चाचा काले खाँ से संगीत सीखा था ।

पटियाला घराने की विशेषताएँ -

1- ख्यालों की कलापूर्ण बन्दिश

2- संक्षिप्त ख्याल

3- आलंकारिक, वक्र वथा फिरतयुक्त तानों का प्रयोग

4- द्रुत तथा अति तानों का कलात्मक प्रयोग

5 ख्याल के साथ ही टप्पा अंग की ठुमरी गाने की विशेष योग्यता

6- गले की तैयारी।

6-अल्लादिया खाँ का घराना

अल्लादिया खाँ साहब ने अपनी एक स्वतन्त्र गायन-शैली स्थापित की। खाँ साहब के पिता ख्वाजा अहमद खाँ को मानतील खाँ (अहमद के परदादा) ने शिक्षा दी थी तथा अल्लादिया खाँ के गुरु उस्ताद जहाँगीर खाँ को अहमद खाँ (खाँ साहब के पिता) ने शिक्षा दी थी। खाँ साहब लगभग १८२१ में महाराष्ट्र में जाकर बस गये थे । अल्लादिया खाँ तथा उनके भाई हैदर खाँ उच्चकोटि के गायक थे। अल्ला- दिया खाँ के तीन पुत्र थे, जिनमें से बदरुद्दीन खाँ (मंजी खाँ) तथा शमशुद्दीन खाँ (भूजी खाँ) इस घराने के गायक हुए हैं। स्व० भास्कर बुवा बखले ने अल्लादिया खाँ साहब से संगीत शिक्षा प्राप्त की थी। आजकल इस घराने के प्रतिनिधि केसरबाई केसकर, मोधूबाई कुर्डीकर तथा शंकर राव सरनाइक हैं।

इस घराने की विशेषताएँ

1- बुद्धिमतापूर्ण तथा पेंचदार गायकी

2- बोल अंगों की विशेषता तथा गीत को मोहक बनाने का अपना ढङ्ग

3- अप्रचलित रागों की ओर विशेष झुकाव

4- राग चलन के समान ही विभिन्न तानों का प्रयोग

5- विलम्बित लय का गायन

6 सिखलाने के लिए कठिन गायकी ।

7- किराना घराना

यह निश्चित नहीं कहा जा सकता कि इस घराने की स्थापना किसने की। कुछ लोगों का विचार है कि इस घराने का सम्बन्ध प्रसिद्ध बीनकार बन्दे अली खाँ से है। कुछ भी हो, पर यह कहना कोई अतिशयोक्ति न होगी कि स्व० अब्दुल करीम खाँ और अब्दुल वहीद खाँ ने इस शैली को प्राणदान दिया है। अब्दुल करीम खाँ का शिक्षण उनके पिता काले खाँ तथा उनके चाचा अब्दुल खाँ के साथ हुआ था। खो काहेब अपनी मधुर आवाज तथा मोहक गायकी के कारण अधिक सोकप्रिय हुए। अब्दुल वहीद खाँ, करीम खाँ के निकट सम्बन्धी थे, जो मिरज में रहते थे तथा इस घराने के प्रतिनिधि थे। अब्दुत करीम खाँ. के तीन भाई अब्दुल हक्क, अब्दुल गनी और अभ्युत मजीद थे। करीम खाँ साहब की आवाज लगाने का ढंग निराला था। स्व० रामभाऊ कुन्द्रगोलकर (सवाई गन्धर्व) तथा स्व० सुरेमा बाबू इस परम्परा के माने हुए गायक थे। इस घराने के प्रमुख प्रतिनिधि कलाकारों के नाम इस प्रकार हैं- हीराबाई बड़ोदकर, सरस्वती बाई राने, गंगूबाई हंगल, रजब अली खाँ, उस्ताद अमीर खाँ, बहरे बुआ, पाकिस्तान की रोशनआरा वेगम इत्यादि ।

इस घराने की विशेपताएँ -

1- आलाप प्रधान गायक

2- स्वर लगाने का भावपूर्ण ढंग

3-एक-एक स्त्रर को बढ़ाते हुए गायकी रोचक बनाना

4-ठुमरी अंग की विशेषता ।

8- पूर्वी घराना –

इस के अन्तर्गत लखनऊ तथा बनारस की शैलियाँ आती हैं। ठुमरी गायन की इन शैलियों में छोटी-छोटी मुरकियाँ, धीमी लय, बोल-तान तथा बोल आलापों की विशेष- ताएँ हैं। लखनऊ की ठुरियों में अधिकतर शायरी और गजलों का आनन्द आता है। आधुनिक समय में पूर्वी अंग की ठुरियों के लिए काशी की रसूलन बाई तथा लखनऊ (फैजाबाद) की बेगम अख्तर, अख्तरी बाई अधिक प्रसिद्ध थीं ।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

7.1 आधुनिक ख्याल गायन की लोकप्रियता का श्रेय किसे जाता है?

1) अदारंग

2) सदारांग

3) 1 और 2

4) कोई नहीं

7.2 कादिरबख्श के पुत्र का नाम क्या था?

1) हस्सू खाँ

2) गुलाम मोहम्मद बक्श

3) पीरबक्श

4) अन्य

7.3 हद्दू खाँ के बेटों के नाम क्या थे?

1) पीरबक्श

2) आमिर खुसरो और जहांगीर

3) रहमत खाँ और मुहम्मद खाँ

4) अन्य

7.4 मुस्ताक हुसेन किस घराने से संबंध रखते हैं?

1) पंजाब

2) दिल्ली

3) लखनऊ

4) ग्वालियर

7.5 आशिक अली खाँ किस घराने से संबंध रखते हैं?

1) आगरा

2) दिल्ली

3) लखनऊ

4) ग्वालियर

7.6 रसूलन बाई किस घराने से संबंध रखते हैं?

1) आगरा

2) दिल्ली

3) जयपुर

4) ग्वालियर

7.6 बड़े गुलाम अली खाँ किस घराने से संबंध रखते हैं?

1) आगरा

2) दिल्ली

3) जयपुर

4) पटियाला

7.4 घराना (सितार)

सितार की उत्पत्ति के विषय में विद्वानों के भिन्न-भिन्न मत है। कुछ विद्वानों का कहना है कि सितार का निर्माण वीणा के आधार पर हुआ है। कुछ के मतानुसार सितार का आविष्कार 13 वीं शताब्दी में अमीर खुसरो ने किया। तीसरे मतानुसार सितार भारतीय वाद्य है। विभिन्न मतों के विपरीत यह सभी मानते हैं कि सितार का आविष्कारअमीर खुसरो ने ही किया।

चौदहवीं शताब्दी में अलाउद्दीन खिलजी के दरबार में अमीर खुसरो दरबारी गायक थे। कुछ दिन पश्चात् अलाउद्दीन खिलजी ने अमीर खुसरो की विद्वत्ता को देख राज्य का मंत्री बना दिया। सन् 1308 में दक्षिण भारत पर विजय प्राप्त करने के उद्देश्य से अलाउद्दीन खिलजी ने देवगिरि राज्य पर चढ़ाई कर दी । इस लड़ाई में देवगिरि की पराजय और अलाउद्दीन की विजय हुई। उन्हीं दिनों 'गोपाल नायक' देवगिरि राज्य में राज्य गायक थे । गोपाल नायक की विद्वत्ता और ज्ञान के

भण्डार को देख, अमीर खुसरो ने उनसे ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा से अलाउद्दीन खिलजी से आग्रह किया कि गोपाल नायक दिल्ली दरबार के योग्य हैं। अलाउद्दीन ने अमीर खुसरो की. बात मान लिया और गोपाल नायक को सम्मान सहित दिल्ली लाया गया। अमीर खुसरो ने गोपाल नायक से अनेक तालों, रागों एवं वाद्यों की शिक्षा प्राप्त की। शिक्षा के उपरान्त गोपाल नायक के सहयोग से अमीर खुसरो ने अनेक रागों, तालों और सितार तथा तबला वाद्य का आविष्कार किया ।अमीर खुसरो ने वीणा के आधार पर सितार का आविष्कार किया । सर्वप्रथम इसमें तीन तार लगाया गया जिससे इस वाद्य का नाम 'सहतार' रखा गया, क्योंकि फारसी भाषा में "संह' शब्द का अर्थ तीन होता है। कालान्तर में तारों की उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए सितार के स्थान पर 'सात तार' कर दिये गये जिससे इसका नाम सितार रख दिया गया।

यद्यपि सितार के आविष्कार का श्रेय अमीर खुसरो को है, तथापि सितार के रूप में संशोधन करके उसे आधुनिकतम रूप प्रदान करने का श्रेय जयपुर में रहनेवाले तानसेन के द्वितीय पुत्र 'सूरतसेन' के वंशज अमृतसेन एवं उनके पौत्र निहालसेन को है। इस प्रकार एक ओर सितार के क्षेत्र में प्रकाण्ड विद्वान् अमीर खुसरो के वंशजों की परम्परा है तो दूसरी ओर संगीत-सम्राट् तानसेन के वंशजों की भी परम्परा है। इस प्रकार सितार वाद्य के दो प्रमुख घराने प्रचलित हैं।

सितार के घराने

इसके पूर्व यह बताया गया है कि सितार वाद्य के दो प्रमुख घराने हैं :-

(1) सैनी घराना, और

(2) अमीर खुसरो घराना।

(1) सैनी घराना

सैनी घराना संगीत सम्राट् तानसेन का घराना है। तानसेन के द्वितीय पुत्र 'सूरतसेन' के वंशजों का सम्बन्ध सितार के इस घराने से है। सूरतसेन के वंशज अमृतसेन एक श्रेष्ठ सितारिये थे। इन्होंने सितार के स्वरूप में संशोधन किया और उसका प्रचार किया। सितार में गूँज उत्पन्न करने हेतु-सितार में. सात तारों के स्थान पर ११ अथवा १२ तार और लगा दिये गये जिन्हें तरब का तार कहते हैं। इसी को तरबदार सितार भी कहते हैं। अमृतसेन के पौत्र निहालसेन ने सितार के स्तर को

और ऊँचा उठाया। इसी वंश के अमीर खाँ सुप्रसिद्ध तन्त्रकार हुए हैं, जिन्होंने सितार में अमीरखानी बाज चलाया। इनके शिष्य इमदाद खाँ हुए। इमदाद खाँ के पुत्र स्व० इनायत खाँ थे जो इस युग के अद्वितीय सितारिये थे। इन्हीं के पुत्र उस्ताद विलायत खाँ हैं जो आधुनिक काल के बेजोड़ कलाकार हैं।

(2) अमीर खुसरो के वंशजों का घराना (मसीतखानी घराने) - जहाँ एक ओर सैनी घराने के कलाकारों ने सितार वादन की कला को बढ़ाया, वहाँ दूसरी ओर अमरी खुसरो के वंशज एवं शिष्य भी सितार वादन की प्रगति के लिए प्रयत्नशील रहे। इस प्रकार सितार का घराना भी सैनी घराने के साथ प्रगति करता रहा। इस घराने के प्रसिद्ध सितारवादक उस्ताद फिरोज खाँ हुए हैं। फिरोज खाँ के पुत्र मसीत खाँ एक उच्चकोटि के सितारवादक थे। इन दोनों पिता-पुत्र में विलक्षण प्रतिभा थी। इनके नाम से फिरोजखानी अर्थात् मसीतखानी बाज भी चल पड़ी जो कि आज तक प्रचलित है।

इसके अलावा बरकत उल्ला खाँ भी उच्चकोटि के सितारवादक थे। सितारवादकों का एक वर्ग लखनऊ में भी बस गया। लखनऊ के ही सुप्रसिद्ध सितारवादक रजा खाँ ने छोटा ख्याल, कव्वाली एवं ठुमरी गायन शैली से प्रभावित होकर द्रुतलय की गतों का निर्माण किया जो आधुनिक युग में रजाखानी गत के नाम से प्रसिद्ध है।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

7.8 अमीर खुसरो किसके दरबारी गायक थे?

1) तानसेन

2) अकबर

3) अलाउद्दीन खिलजी

4) औरंगजेब

7.9 अमीर खुसरो ने किस वाद्य के आधार पर सितार का आविष्कार किया।

1) रबाब के आधार पर

2) वीणा के आधार पर

3) रुद्र वीणा के आधार पर

4) वॉयलीन के आधार पर

7.10 इनमे से कौन सा सितार का घराना है।

1) कलकत्ता घराना

2) गया घराना

3) सैनी घराना

4) मुंबई घराना

7.11 सैनी घराना संगीत सम्राट् ....का घराना है।

1) बैजु बावरा

2) अलाउद्दीन खाँ

3) फिरोज खाँ

4) तानसेन

7.12 अमृत सेन कौन से घराने से संबंध रखते थे?

1) अजराड़ा घराना

2) सेनीया/सैनी घराना

3) लखनऊ घराना

4) तानसेन

7.13 फिरोजखान ने कौन सी गत का विष्कार किया?

1) विलंबित गत

2) द्रुत गत

3) फिरोजखानी गत

4) राजखानी गत

7.5 सारांश

घराना भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक महत्वपूर्ण विषय है, जिसके बिना अच्छे संगीत की कल्पना भी नहीं की जा सकती। घरानों के अध्ययन से शास्त्रीय संगीत के आधार मे मजबूती, तैयारी और परिपक्क्वता आती है, जो श्रोताओं को कलाकार की प्रस्तुति से अनायास ही मंत्रमुग्ध करती हैं।

7.6 शब्दावली

- अलंकार (Alankar): सप्तक के स्वरों से ही अलंकार बनाए जाते है। जिस प्रकार एक स्त्री सुन्दर दिखने के लिए आभूषणों से खुद को सजाती है वही स्थान संगीत मे अलंकार का है।
- राग (Raga): संगीत का एक विशेष संरचनात्मक पद्धति, जो स्वरों के विशेष क्रम का उपयोग करके भावनात्मक और मनोरंजन को व्यक्त करता है।
- ताल (Taal): सप्तक के स्वरों को जब अलंकारों के रूप मे यार राग मे तानों या तोड़ों के रूप मे ताल के साथ बजाया जाता है तो श्रोता उसे सुनकर अनायास ही मंत्रमुग्ध हो जाता है। संगीत में अंकित समय स्तर को ताल कहा जाता है, जो गायन या वादन के साथ समय की गणना करने में मदद करता है।
- लय (Lay): संगीत में गति या चलन को लय कहा जाता है, जो ताल की गति को निर्दिष्ट करता है।
- रागिनी (Ragini): रागों की सहायक संगीत पद्धति जिसमें संगीत रागों के विभिन्न अनुभवों और भावों को व्यक्त करने के लिए मेलोडी और ताल का उपयोग किया जाता है।
- श्रुति (Shruti): संगीत में सबसे छोटे स्वर को श्रुति कहा जाता है, जो स्वर स्थान पर किसी भी विस्तार में पाया जा सकता है। श्रुतियों से ही सप्तक के स्वरों का निर्माण हुआ है।
- स्वर (Swar): संगीत में विभिन्न ऊर्जाओं को स्थान देने वाले तारों को स्वर कहा जाता है, जो संगीत के मूल भाग हैं।
- मेलोडी (Melody): संगीत में स्वरों के विशेष क्रम का एक संरचित और आकर्षक संयोजन, जिससे एक गाना या संगीत कविता का निर्माण होता है।

7.7 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1 प्रश्नों के उत्तर

7.1) उत्तर: 3

7.2) उत्तर: 1

7.3) उत्तर: 3

7.4) उत्तर: 4

7.5) उत्तर: 1

7.6) उत्तर: 3

7.7) उत्तर: 4

स्वयं जांच अभ्यास 2 प्रश्नों के उत्तर

7.8 उत्तर: 3

7.9 उत्तर: 2

7.10 उत्तर: 3

7.11 उत्तर: 4

7.12 उत्तर: 2

7.13 उत्तर: 3

7.8 संदर्भ

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). कर्मिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2010). राग परिचय (भाग 4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

प्रो. केशव शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. निर्मल सिंह द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

7.9 अनुशंसित पठन

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 2), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (1998). मधुर स्वरलिपि संग्रह. संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

7.10 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. घराना शब्द का अर्थ एवं संक्षिप्त परिचय लिखिए।

प्रश्न 2 घराना शब्द का अर्थ एवं परिभाषा तथा गायन के घरानों का संक्षिप्त परिचय लिखिए।

प्रश्न 3 घराना शब्द का अर्थ एवं परिभाषा तथा गायन के किन्हीं 4 घरानों का संक्षिप्त परिचय लिखिए।

प्रश्न 4 घराना शब्द का अर्थ एवं परिभाषा तथा गायन के किन्हीं 5 घरानों का संक्षिप्त परिचय लिखिए।

प्रश्न 5 घराना शब्द का अर्थ एवं परिभाषा तथा सितार के घरानों का संक्षिप्त परिचय लिखिए।

प्रश्न 6 घराना शब्द का अर्थ एवं परिभाषा तथा सितार के किन्हीं 2 घरानों का संक्षिप्त परिचय लिखिए।

प्रश्न 7 घराना शब्द का अर्थ एवं परिभाषा तथा सितार और गायन के किन्हीं 2 घरानों का संक्षिप्त परिचय लिखिए।

प्रश्न 8 घराना शब्द का अर्थ एवं परिभाषा तथा सितार और गायन के किन्हीं 3 घरानों का संक्षिप्त परिचय लिखिए।

इकाई-8
कुतुप(वाद्यवृंद), प्रबंध और संगीत तथा सौंदर्यशास्त्र

इकाई की रूपरेखा

8.1	भूमिका
8.2	उद्देश्य
8.3	कुतुप वृंद परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 1
8.4	प्रबंध परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 2
8.5	संगीत और सौन्दर्यशास्त्र परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 3
8.6	सारांश
8.7	शब्दावली
8.8	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
8.9	संदर्भ
8.10	अनुशंसित पठन
8.11	पाठगत प्रश्न

8.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA305 की यह इकाई है। इस इकाई में संगीत, विशेष रूप से गायन और सितार वाद्य के संदर्भ में, कुतुप, प्रबंध और संगीत तथा सौंदर्यशास्त्र विषय का अर्थ परिचय और विस्तृत अध्ययन किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में नए नए वाद्य वृंद सुनने को मिलते हैं। अगर विद्यार्थी कुतुप के बारे मे ज्ञान अर्जित करना कहता है तो इस विषय के माध्यम से प्राप्त कर सकता है। प्रबंध गायन शैली के इतिहास का अध्ययन करके आधुनिक मे प्रबंध के आयामों को जान सकता है। संगीत रस और भाव पूर्ण है, जो सर्वविदित है। सौंदर्यशास्त्र विषय मे भी रस और भावों के बारे मे बताया गया है जिससे ज्ञान अर्जन मे सहायता होगी।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी कुतुप, प्रबंध और संगीत तथा सौंदर्यशास्त्र विषय का अर्थ परिभाषा का विस्तार से अध्ययन कर पाएंगे तथा साथ ही शास्त्रीय संगीत के आधारभूत विषयों मे अपनी पकड़/मजबूती का सकेंगे।

8.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् विद्यार्थी

- कुतुप विषय का अर्थ समझ सकेंगे।
- प्रबंध विषय का अर्थ समझ सकेंगे।
- संगीत तथा सौंदर्यशास्त्र विषय का अर्थ समझ सकेंगे।

इन उद्देश्यों के माध्यम से, विद्यार्थी न केवल कुतुप, प्रबंध और संगीत तथा सौंदर्यशास्त्र के तकनीकी पहलुओं को जान पाएंगे, बल्कि इसके गहरे सांगीतिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक महत्व को भी समझ सकेंगे। इससे उनके संगीत के

प्रति दृष्टिकोण में गहराई और समृद्धि आएगी, साथ ही मंच प्रदर्शन मे परिपक्क्वता का अनुभव भी प्राप्त होगा, जो कि उनके भविष्य में सहायक सिद्ध होगा।

8.3 कुतुप वृंद परिचय

प्राचीन समय में वृन्द वादन को 'कुतुप' कहा जाता था। इस प्रकार के वादन में भिन्न-भिन्न प्रकार के वाद्यों को एक नियमित ढंग से बजाया जाता था। भरत ने नाट्यशास्त्र में तीन प्रकार के 'कुतुप' का उल्लेख किया है।

(1) तत् कुतुप

(2) अवनद्ध कुतुप

(3) नाट्य कुतुप

तत् कुतुप में विभिन्न प्रकार के तंत्री वाद्यों का समावेश रहता था। अवनद्ध कुतुप में पुष्कर वाद्यों को बजाया जाता था।

नाट्य कुतुप में सभी प्रकार के पात्रों का ग्रहण होता था।

नाट्य कुतुप के तीन भेद माने जाते हैं।

(1) उत्तम -4 गायक + 8 सहगायक 4 मृदंग वादक

(2) अधम 2 गायक + 4 सहगायक 2 मृदंग वादक

(3) मध्यम- जिस कुतुप में भागीदारों की संख्या अधम से कम हो उसे 'मध्यम कुतुप' कहा जाता है।

मुगल काल में मुरसली, वरदाश्त, सिराजी और कलंदरी आदि धुनें वृंद वादन के अन्तर्गत बजाई जाती थी।

मिर्जा के अनुसार गायक और वादक संगीतज्ञों का एक साथ मिलान वृन्द कहलाता है। आधुनिक समय में भारतीय संगीत के महान् विद्वान पं० रविशंकर जी ने इस दिशा में सकारात्मक कदम उठाया है। इन्होंने अनेक वृन्द वादन की रचनाओं का निर्माण किया तथा अनेक देशों में बहुत ही सफल कार्यक्रम प्रस्तुत किए। इन्होंने हिन्दुस्तानी तथा पाश्चात्य संगीत का सुंदर मेल कर एक नई दिशा प्रदान की है।

गंधर्व-गांधर्व - जो संगीत स्वर्गलोक में गंधों द्वारा गाया जाता था, जिसका उद्देश्य मोक्ष प्राप्ति रहा उस वेदों के अपौरुषेय व अनादि संगीत को 'गांधर्व' कहा गया है। गांधर्व संगीत को अनादि संगीत माना जाता है जिसका प्रयोग देवलोक में गंधर्वो द्वारा आत्मिक उन्नति अथवा मोक्ष प्राप्ति के लिए होता था। गांधर्व संगीत का मूलाददेश्य मोक्ष प्राप्ति ही रहा। कठोर नियमों में बंधें इस संगीत का प्रयोग केवल गंधर्वों द्वारा किया जाता था। यह संगीत लोक रूचि के अनुसार परिवर्तित नहीं होता था। विशिष्ट नियमों में बंधकर यह संगीत गंधर्वों द्वारा ही प्रयोज्य रहा।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

8.1 नाट्यशास्त्र मे कुतुप के कितने भेद माने गए हैं?

1) 2

2) 5

3) 3

4) कोई नहीं

8.2 इनमे से कौन स कुतुप का भेद नहीं है

1) उत्तम

2) अधम

3) पौरवी

4) कोई नहीं

8.3 उत्तम कुतुप मे कितने गायक होते हैं?

1) 4

2) 3

3) 2

4) कोई नहीं

8.4 अधम कुतुप मे कितने गायक होते हैं?

1) 4

2) 2

3) 3

4) कोई नहीं

8.5 उत्तम कुतुप मे कितने सहगायक होते हैं?

1) 8

2) 3

3) 2

4) कोई नहीं

8.6 अधम कुतुप मे कितने सहगायक होते हैं?

1) 3

2) 2

3) 4

4) कोई नहीं

8.4 प्रबंध परिचय

प्राचीन काल से अब तक संगीत-जगत में प्रबन्ध शब्द का प्रयोग होता आया है, किन्तु तब से अब तक इसने अनेक उतार-चढ़ाव देखे हैं। इस दृष्टि से मतंग कृत 'बृहदेशी' नान्यदेव कृति 'भरतभाष्य', शारंगदेव कृत 'संगीत रत्नाकर', एवं कुम्भा कृति 'संगीतराज' बड़े महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। भरत कृति 'नाट्य शास्त्र' में प्रबन्ध का उल्लेख इस नाम से नहीं है, किन्तु 32वें अध्याय में 'ध्रुवा' के वर्णन को देशी प्रबन्धों का पूर्व रूप कहा जा सकता है। ध्रुवा का सम्बन्ध नाट्य से था। नाटक के अन्तर्गत प्रयोग किये जाने वाले गीतों का शास्त्रीय नियमन ध्रुवा द्वारा किया जाता था। बाद में जब नाट्य से अलग होकर गायन का प्रचार बढ़ा, तब गीतों का स्वरूप नाट्य गीतों से कालांतर में धीरे-धीरे अलग होता गया। ऐसे पृथक गीतों का उल्लेख सर्वप्रथम मतंग कृति 'बृहद्देशी' में मिलता है। इससे यह सिद्ध होता है कि उस समय तक नाट्य से पृथक

गीतों का विकास हो चुका था। भरत के ध्रुवा का वर्णन भरत के बाद के ग्रन्थों जैसे संगीत रत्नाकर, संगीत राज, बृहद्देशी में नहीं मिलता है, केवल देशी प्रबन्धों का उल्लेख मिलता है। नान्यदेव कृति 'भरतभाष्य' में ध्रुवा और देशी प्रबन्ध दोनों का वर्णन मिलता है।

स्वर, ताल और पद इन तीनों का समावेश प्रबंध में मिलता हैं इसलिए स्वर, ताल एवं शब्द से युक्त रचना को प्रबन्ध कहते हैं। आधुनिक 'बन्दिश' या 'चीज' इसी के अन्तर्गत आती है। इसमें स्वर-रचना, ताल रचना और पद रचना तीनों का समावेश रहता है। गांधर्व में स्वर, ताल, पद तीनों का समावेश है जो मार्गी संगीत के अन्तर्गत आता है। यह वेदों की भांति अपौरुषेय है। गान पौरुषेय है अर्थात् मानव द्वारा रचित है, इसलिए यह देशी संगीत के अन्तर्गत आता है। गान के पुनः दो भाग किये गये हैं-निबद्ध गान तथा अनिबद्ध गान। निबद्ध गान को ही प्रबन्ध कहते हैं जो तालबद्ध होता है। अनिबद्ध गान तालरहित होता है, इसलिये इसके अन्तर्गत आलाप आता है।

शास्त्रों में निबद्ध गान के तीन नाम मिलते हैं- प्रबंध, वस्तु, और रूपक। इनमें प्रबंध सब से अधिक प्रचलित नाम है। इसके शाब्दिक अर्थानुसार प्र+बन्ध अर्थात् वह गेय रचना जिसमें अंगों को सुन्दर ढंग से बांधा गया हो। इस प्रकार प्रबंध में विभिन्न अंगों को एक में बद्ध होना आवश्यक है। आधुनिक गेय गीत-ख़्याल, ठुमरी आदि बन्दिशें या चीजें इसी के अन्तर्गत आती है। पं० मतंग सभी प्रबन्धों को देशी प्रबन्ध के अन्तर्गत मानते थे, किन्तु शारंगदेव ने प्रबन्धों को तीन भागों में बांटा है - सूड प्रबन्ध, आलिक्रम प्रबन्ध और विप्रकीर्ण प्रबन्ध। प्रबन्धों की कुल संख्या 75 मानी है।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

8.7 प्रबंध का उल्लेख सर्वप्रथम किस ग्रथ मे मिलता है?

1) संगीत रत्नाकर

2) बृहदेशी

3) नाट्यशास्त्र

4) कोई नहीं

8.8 शारंगदेव द्वारा प्रबंधों की संख्या कितनी मानी गई है?

1) 75

2) 78

3) 79

4) कोई नहीं

8.5 संगीत और सौन्दर्यशास्त्र परिचय

इसे एक स्वतंत्र विषय बनाने का श्रेय अठारवीं शताब्दी के जर्मन दार्शनिक बामगार्टन को दिया जाता है। इससे पूर्व सौन्दर्य अन्य शास्त्रों, जैसे दर्शनशास्त्र, काव्यशास्त्र आदि का ही एक हिस्सा था, आज के युग में सौन्दर्यशास्त्र सभी ललित कलाओं का सैद्धान्तिक विवेचन का क्षेत्र है।

संस्कृत वांग्मय में सौन्दर्य के अनेक पर्याय मिलते हैं। जैसे-चारूत्व, वैचित्रय, रमणीयता, सौष्ठव, लावण्य आदि और सुन्दर के चारू, सुषम, रूचिर, मनोरम, ललित आदि। भारतीय संस्कृति में सौन्दर्य शब्द का प्रयोग कम और उसके पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग अधिक मात्रा में रहा है। किन्तु ये सभी शब्द चिरकाल से सौन्दर्य की व्याख्या करने में प्रयोग किए जा रहे हैं।

सौन्दर्य का आकर्षण तीव्र है। जब कोई वस्तु अथवा कला भौतिक एवं मानसिक रूप से हमें इन्द्रिय आनन्द का अनुभव कराती है तो वह सौन्दर्य की वस्तु है अथवा कला है। अतः इन्द्रिय सुख की अनुभूति ही सौन्दर्य है।

सौन्दर्य का अस्तित्व ही कुरूपता से है। जब हम अपने चारों ओर कुरूपता को देखते हैं तब मन किसी सुन्दर वस्तु को देखकर बहुत खुश होता है अगर सृष्टि में कुरूपता का अंश कहीं भी न होता तो सौन्दर्य का अस्तित्व और उसका महत्व मानव कभी न समझ पाता। जिस प्रकार कीचड़ ही कीचड़ में चलने के बाद एक बगीचा जो मुलायम घास और खुशबूदार फूलों से सजा हो, उसमें प्रवेश करते ही मुंह से 'वाह' निकलती है। यह 'वाह' उस सुख एवं आनन्द का द्योतक है, जो हमें कीचड़ में चलने के बाद इस बगीचे में प्रवेश करने पर अनुभव हो रहा है। किन्तु अगर हर तरफ सुव्यवस्थित बगीचे हैं और मानव दिन-रात उन्हीं को देखता रहे तो मुंह से 'वाह'। कदापि नहीं निकलेगीं। इसलिए सौन्दर्य का अस्तित्व ही कुरूपता होने के कारण है।

सौन्दर्य दो प्रकार का होता है- एक तो बाह्य, जो केवल हमारी इन्द्रियों को सुख का अनुभव कराता है, और दूसरा आन्तरिक, जो ऊपरी सतह पर क्षणभर के सौन्दर्य से मोहित नहीं होता, किन्तु अपनी आत्मा से उसका अनुभव करता है। यही सौन्दर्य परम सत्य की प्राप्ति है। भारतीय संस्कृति और कला इसी सौन्दर्य प्राप्ति को अपना उद्देश्य मानती है।

सौन्दर्य शास्त्र 'एस्थेटिक्स' के पर्यायवाची के रूप में प्रचलित है। एस्थेटिक्स शब्द की व्युत्पत्ति ग्रीक शब्द 'एस्थेटिक्स' से हुई है। जिसका अर्थ है-इन्द्रिय संवेदना। एस्थेटिक्स का अर्थ होता है वह शास्त्र जो इन्द्रिय संवेदना के सिद्धान्तों का अण्ययन करें। 'एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका' में 'हेलमुट कुन्न' ने सौन्दर्य शास्त्र को कलाओं और उनसे संबंध (मानव) व्यवहार तथा अनुभूति का सैद्धान्तिक अध्ययन् बताया है।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

8.9 सौंदर्यशास्त्र विषय को एक स्वतंत्र विषय बनाने का श्रेय किसे जाता है?

1) प्लूटो

2) बामगार्टन

3) सुकरात

4) कोई नहीं

8.6 सारांश

कुतुप, प्रबंध और संगीत तथा सौंदर्यशास्त्र भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक महत्वपूर्ण विषय है, जिसके बिना अच्छे संगीत की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इन विषयों के अध्ययन से शास्त्रीय संगीत के आधार मे मजबूती, तैयारी और परिपक्क्वता आती है, जो श्रोताओं को अनायास ही मंत्रमुग्ध करती हैं। शास्त्रीय संगीत मे इनके अध्ययन से संगीतज्ञ के गायन वादन मे रंजकता और परिपक्क्वता आती है।

8.7 शब्दावली

- अलंकार (Alankar): सप्तक के स्वरों से ही अलंकार बनाए जाते है। जिस प्रकार एक स्त्री सुन्दर दिखने के लिए आभूषणों से खुद को सजाती है वही स्थान संगीत मे अलंकार का है।

- राग (Raga): संगीत का एक विशेष संरचनात्मक पद्धति, जो स्वरों के विशेष क्रम का उपयोग करके भावनात्मक और मनोरंजन को व्यक्त करता है।
- ताल (Taal): सप्तक के स्वरों को जब अलंकारों के रूप मे यार राग मे तानों या तोड़ों के रूप मे ताल के साथ बजाया जाता है तो श्रोता उसे सुनकर अनायास ही मंत्रमुग्ध हो जाता है। संगीत में अंकित समय स्तर को ताल कहा जाता है, जो गायन या वादन के साथ समय की गणना करने में मदद करता है।
- लय (Lay): संगीत में गति या चलन को लय कहा जाता है, जो ताल की गति को निर्दिष्ट करता है।
- रागिनी (Ragini): रागों की सहायक संगीत पद्धति जिसमें संगीत रागों के विभिन्न अनुभवों और भावों को व्यक्त करने के लिए मेलोडी और ताल का उपयोग किया जाता है।
- श्रुति (Shruti): संगीत में सबसे छोटे स्वर को श्रुति कहा जाता है, जो स्वर स्थान पर किसी भी विस्तार में पाया जा सकता है। श्रुतियों से ही सप्तक के स्वरों का निर्माण हुआ है।
- स्वर (Swar): संगीत में विभिन्न ऊर्जाओं को स्थान देने वाले तारों को स्वर कहा जाता है, जो संगीत के मूल भाग हैं।
- मेलोडी (Melody): संगीत में स्वरों के विशेष क्रम का एक संरचित और आकर्षक संयोजन, जिससे एक गाना या संगीत कविता का निर्माण होता है।

8.8 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1 प्रश्नों के उत्तर

8.1) उत्तर: 3

8.2) उत्तर: 3

8.3) उत्तर: 1

8.4) उत्तर: 2

8.5) उत्तर: 1

8.6) उत्तर: 3

स्वयं जांच अभ्यास 2 प्रश्नों के उत्तर

8.7) उत्तर: 2

8.8) उत्तर: 1

स्वयं जांच अभ्यास 2 प्रश्नों के उत्तर

8.9) उत्तर: 2

8.9 संदर्भ

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). कर्मिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2010). राग परिचय (भाग 4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

प्रो. केशव शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. निर्मल सिंह द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

8.10 अनुशंसित पठन

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 2), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (1998). मधुर स्वरलिपि संग्रह. संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

8.11 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. कुतुप,का अर्थ एवं परिभाषा लिखें।

प्रश्न 2 प्रबंध का अर्थ एवं परिभाषा लिखें।

प्रश्न 3 संगीत तथा सौंदर्यशास्त्र का अर्थ एवं परिभाषा लिखें।

प्रश्न 4. कुतुप, प्रबंध और संगीत तथा सौंदर्यशास्त्र का अर्थ एवं परिभाषा विस्तार सहित लिखें।

इकाई-9
भारतीय शास्त्रीय संगीत मे प्रयुक्त अवनद्ध वाद्य यंत्रों की आधारभूत जानकारी (तबला और पखावज) तथा शास्त्रीय संगीत और फिल्मी संगीत

इकाई की रूपरेखा

9.1	भूमिका
9.2	उद्देश्य
9.3	भारतीय शास्त्रीय संगीत मे प्रयुक्त अवनद्ध वाद्य यंत्रों की आधारभूत जानकारी (तबला और पखावज) परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास 1
9.4	शास्त्रीय संगीत और फिल्मी संगीत
9.5	सारांश
9.6	शब्दावली
9.7	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
9.8	संदर्भ
9.9	अनुशंसित पठन
9.10	पाठगत प्रश्न

9.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA305 की यह इकाई है। इस इकाई में संगीत, विशेष रूप से गायन और सितार वाद्य के संदर्भ में, भारतीय शास्त्रीय संगीत मे प्रयुक्त अवनद्ध वाद्य यंत्रों की आधारभूत जानकारी (तबला और पखावज) परिचय और शास्त्रीय संगीत और फिल्मी संगीत का विस्तृत अध्ययन किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। अवनद्ध वाद्य पर प्रस्तुति देने से पहले कलाकार को अपने वाद्य का सम्पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। ये विषय विद्यार्थी को उसके वाद्य के प्रति गयंवर्धक बनाएगा। संगतकार और एकल वादन के लिए ताल के साथ शास्त्रीय और फिल्मी संगीत का ज्ञान होना जरूरी है और ताल वाद्यों की भी सम्पूर्ण जानकारी होनी चाहिए जो विद्यार्थी को इस विषय के माध्यम से मिल सकेगी।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी भारतीय शास्त्रीय संगीत मे प्रयुक्त अवनद्ध वाद्य यंत्रों की आधारभूत जानकारी (तबला और पखावज) परिचय और शास्त्रीय संगीत और फिल्मी संगीत और इसके रूपों के बारे मे विस्तार से अध्ययन कर पाएंगे तथा साथ ही अवनद्ध वाद्यों पर रागों के अभ्यास से अपने वादन मे मधुरता ला सकेंगे। विद्यार्थी इस विषय के अध्ययन के पश्चात तंत्री वाद्य के साथ सही व्यवहार करने मे समर्थ हो सकेंगे।

9.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् विद्यार्थी

- भारतीय शास्त्रीय संगीत मे प्रयुक्त अवनद्ध वाद्य यंत्र की आधारभूत जानकारी विषय का अर्थ समझ सकेंगे।
- भारतीय शास्त्रीय संगीत मे प्रयुक्त अवनद्ध वाद्य यंत्रों की आधारभूत जानकारी (तबला और पखावज) परिचय विषय का अर्थ इसके विभिन्न प्रकाओं का अध्ययन कर सकेंगे।
- शास्त्रीय संगीत और फिल्मी संगीत का अर्थ और महत्त्व समझ सकेंगे।

इन उद्देश्यों के माध्यम से, विद्यार्थी न केवल भारतीय शास्त्रीय संगीत मे प्रयुक्त अवनद्ध वाद्य यंत्रों की आधारभूत जानकारी (तबला और पखावज) परिचय और शास्त्रीय संगीत और फिल्मी संगीत विषय के तकनीकी पहलुओं को जान पाएंगे, बल्कि इसके गहरे सांगीतिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक महत्व को भी समझ सकेंगे। इससे उनके संगीत के प्रति दृष्टिकोण में गहराई और समृद्धि आएगी, साथ ही मंच प्रदर्शन मे परिपक्क्वता का अनुभव भी प्राप्त होगा, जो कि उनके भविष्य में सहायक सिद्ध होगा।

9.3 भारतीय शास्त्रीय संगीत मे प्रयुक्त अवनद्ध वाद्य यंत्रों की आधारभूत जानकारी (तबला और पखावज) परिचय

भारतीय संगीत में तीन अंग गायन, वादन, नृत्य हैं। संगीत में वाद्यों का प्रयोग होता चला आया है। कुछ वाद्य ऐसे हैं, जिनमें स्वर की प्रधानता रहती है

और कुछ वाद्य ऐसे हैं जिनमें लय की प्रधानता रहती है, जैसे : डमरू, झांझ, ढोलक मृदंग तथा तबला आदि। संगीत में न जाने कब से लय अथवा ताल दिखाने वाले इन वाद्यों का प्रयोग होता आ रहा है। आज तो इनका इतना अधिक महत्व बढ़ गया है कि संगीत का कोई भी कार्यक्रम चाहे गायन, वादन अथवा नृत्य का हो इसके बिना अधूरा रहता है।

शास्त्रीय गायन की संगति के लिए आज से कुछ वर्षों पूर्व पखावज या मृदंग नामक वाद्य का स्थान सर्वोपरि था। वह युग ध्रुपद और धमार की गायकी का युग था। परन्तु समय के परिवर्तन के साथ-साथ गायकी में भी परिवर्तन हुआ और जैसे-जैसे ध्रुपद का स्थान ख़्याल ने लिया वैसे ही वैसे तबले ने पखावज का स्थान ग्रहण कर लिया। यह तो सर्वविदित है कि आज तबले का कितना अधिक प्रयोग होता है। इसका प्रयोग गायन, वादन तथा नृत्य की संगति में और स्वतन्त्र वादन में किया जाता है।

भारतीय संगीत में गायन, वादन तथा नृत्य के साथ ताल सम्बन्धी वाद्यों का प्रयोग अत्यंत प्राचीन काल से होता चला आ रहा है। उपलब्ध प्राचीन संगीत के इतिहास में हमें ताल संबंधी वाद्यों का प्रयोग कहीं-कहीं मिलता है। पौराणिक कथाओं में अनेक ताल वाद्यों की चर्चा की गई है। प्राचीन काल के जिन ताल सम्बन्धी वाद्यों का उल्लेख मिलता है, उसमें आघाती, आडम्बर वानस्पति, भेरी, दुर्दुर ढोल, नगाड़ा तथा मृदंग या पखावज आदि मुख्य हैं। पखावज का तो

प्रयोग आज भी कभी-कभी देखने को मिलता है और ढोलक का प्रयोग उत्तर भारत के लोक गीतों के साथ किया जाता है। आधुनिक युग के ताल सम्बन्धी वाद्यों में सबसे प्रमुख स्थान तबले को प्राप्त है। इसकी उत्पत्ति के विषय में अनेक मत हैं। कुछ विद्वान के अनुसार प्राचीन काल के दुर्दुर नामक वाद्य का आधुनिक रूप बदला है। कुछ लोग तबले के जन्म का सम्बन्ध फारस के वाद्य तव्ल से जोड़ते हैं। परन्तु अधिकांश विद्वानों का मत है कि तेरहवीं शताब्दी के बादशाह अल्लाउद्दीन खिलजी के राज्यकाल के प्रसिद्ध विद्वान अमीर खुसरो ने पखावज को दो भागों में विभाजित करके तबले को जन्म दिया। इस विचार को मानने वाले व्यक्तियों का कथन है कि जिस प्रकार पखावज के बायें में आटा गूंथ कर लगाया जाता है, उसी प्रकार पंजाब में बहुत दिन तक तबले के बायें में आटा गूंथ कर लगाने की प्रथा थी।

तेरहवीं सदी में तथा उसके पूर्व ध्रुपद जैसे गम्भीर गायन का प्रचार था, जिसके साथ पखावज का प्रयोग किया जाता है। परन्तु उसके पश्चात् उत्तर भारत में राज्य परिवर्तन हुआ। मुगल बादशाहों के हाथ में शासन की बागडोर गई और धीरे-धीरे लोगों की मानसिक तथा सामाजिक परिस्थितयों में परिवर्तन होने लगा। उसके प्रभाव से संगीत अछूता न रह सका। जौनपुर के सुल्तान हुसैन शर्की ने बड़े ख़्याल को तथा अमीर खुसरो ने कव्वाली के आधार पर छोटे ख़्याल को जन्म दिया, जो ध्रुपद गायन की अपेक्षा कहीं अधिक कोमल तथा मधुर गायन शैली थी। उसी नवीन गायकी के साथ पखावज जैसे गम्भीर तथा जोरदार वाद्य को बजाया जाना उपयुक्त न था। फलस्वरूप किसी मधुर ताल वाद्य की आवश्यकता पड़ी और सम्भवतः उसी आवश्यकता ने तबले को जन्म दिया। हम देखते हैं कि ख़्याल गायकी और तबले ने लगभग साथ ही साथ जन्म लिया और प्रगति की।

तबले का जन्म किसी भी प्रकार हुआ हो, किन्तु इतना तो उपलब्ध इतिहास के अनुसार निश्चित है कि उसके वादन को आधुनिक रूप देने का श्रेय दिल्ली के प्रसिद्ध उस्ताद सिद्धार खाँ को है, जिन्होंने पखावज के बोलों को तबले पर बजाने के योग्य बनाया तथा उसके रूप में सुधार लाकर आधुनिक तबले का रूप देकर इसका प्रचार किया और दिल्ली के प्रसिद्ध घराने दिल्ली घराने की नींव डाली।

उन्हीं की वंश परम्परा तथा शिष्य परम्परा ने भारत में तबले का प्रचार किया और वर्तमान घरानों की नींव डाली।

तबले के अंग

तबले को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है।

1 दाहिना या तबला- जिसे अधिकतर दाहिने हाथ से बजाया जाता है। यह प्रायः दस ग्यारह इंच ऊँचा तथा इसका मुंह पांच, छः इंच चौड़ा होता है।

2 बायां का डग्गा जिसे अधिकतर बायें हाथ से बजाया जाता है, और जो दाहिने तबले की अपेक्षा कम ऊँचा और चौड़े मुंह का होता है।

दाहिने तबले का अंग

1 लकड़ी दाहिने तबले का यह महत्वपूर्ण अंग है, जिस पर तबले और सब अंग स्थित रहते हैं। प्रायः दस या ग्यारह इंच ऊँचा, इसके नीचे का व्यास आठ या नौ इंच का तथा ऊपर का मुंह पांच या छः इंच का होता है। लकड़ी, अन्दर से खोखली होती है तथा अधिकतर आम, शीशम, नीम तथा कटहल की होती है। उसके लिये खैर या बिजयसाल की लकड़ी अच्छी समझी जाती है।

2 पूड़ी - लकड़ी के मुंह पर मढे हुए चमड़े के सम्पूर्ण अंग को पूड़ी कहते हैं, जिसके अन्तर्गत स्याही, लव या चांटी, गजरा आदि आते हैं।

3 गजरा पूड़ी के किनारे-किनारे चारों ओर चमड़े की एक गुंथी हुई चोटी को गजरा, श्रृंगार या पगड़ी कहते हैं। इसमें 16 छेद होते हैं, जिसे घर कहते है। इनमें दो बद्धी डालकर पूड़ी को लकड़ी के साथ कसा जाता है।

4 चांटी - पूड़ी के किनारे-किनारे तथा गजरे के बाद करीब आधा या पौना इंच चमड़े की एक गोट सी लगी रहती है, जिसे चांटी या किनार कहते हैं।

5 स्याही-पूड़ी के बीचो-बीच और चांटी के करीब एक या पौना इंच की दूरी पर गोल आकृति में काले रंग का मसाला लगा रहता है उसे स्याही, काली या मसाला कहते हैं।

6 लव - चांटी और स्याही के बीच के स्थान को लव कहते हैं।

7 बद्धी-गजरों के छिद्रों से जाने वाली चमड़े की लम्बी डोर या पट्टी को बद्धी कहते हैं। उसी से पूड़ी लकड़ी से कसी जाती है।

8 गुडरी - तबले की पेंदी से चमड़े की पट्टी का एक छोटा घेरा होता है, जिसे बीच से बद्धी लकड़ी पर पहनायी जाती है, उसे गुडरी कहते हैं।

9 गट्टा - दाहिने तबले में जो लकड़ी के गोल-गोल लम्बे टुकड़े बद्धी के नीचे कसे होते हैं, गट्टे कहलाते हैं। इनकी संख्या आठ होती है। इनसे तबले को उतारने और चढ़ाने में सहायता मिलती है। तबला विभिन्न स्वरों में मिलाया जाता है, इसलिए इसमें गट्टों की बहुत आवश्यकता पड़ती है।

डग्गा अथवा बांया के अंग

1 कूड़ी - जिस प्रकार दाहिने तबले में लकड़ी होती है, उसी प्रकार बांया में कूड़ी होती है। इसी पर चमड़ा मढ़ा जाता है। यह अधिकतर मिट्टी का, गोल आकार का बना होता है। सरलता से फूट जाने के भय से अब यह तांबे, लोहे अथवा पीतल या लकड़ी का बनाया जाने लगा है। इसके मुंह की चौड़ाई लगभग दस या ग्यारह इंच होता है और दाहिने तबले की अपेक्षा कम ऊँचा होता है। इसे खोल भी कहा जाता है।

2 पूड़ी- कूड़ी के मुंह पर चमड़े के लगे हुए सम्पूर्ण भाग को पूड़ी कहते हैं। दाहिने के समान बायें की पूड़ी में भी गोट, मैदान तथा स्याही आदि का समावेश रहता है।

3 गोट - पूड़ी के अन्दर किनारे-किनारे लगी हुई चमड़े की पट्टी को गोट कहते हैं। यह दाहिने तबले की चांटी के समान होता है, परन्तु उससे कुछ अधिक चौड़ा होता है और इसका उद्देश्य मुख्य खाल की रक्षा करना होता है।

4 स्याही - पूड़ी के एक किनारे तथा गोट से कुछ स्थान छोड़ कर करीब ढाई या तीन इंच का गोला मसाला लगाया जाता है, जिसे स्याही कहते हैं। दाहिने की तरह बायें में बिल्कुल बीच में स्याही नहीं लगायी जाती।

5 मैदान - गोट और स्याही के बीच के भाग को मैदान कहते हैं।

6 गजरा - जिस प्रकार दाहिने तबले की पूड़ी के चारों ओर चमड़े की गुथी हुई चोटी रहती है, उसी प्रकार बायें में गुथी हुई चोटी रहती है, जिसे गजरा कहते हैं।

7 गुडरी - दाहिने के समान बायें की पेंदी में भी चमड़े का छोटा गोला मढ़ा रहता है, जिसके बीच से बद्धियां पहनायी जाती है, उसे गुडरी कहते हैं।

8 बद्धी-दाहिने की बद्धी के समान इसमें भी बद्धी होती है। इसमें कभी-कभी सुविधा के लिए चमड़े की पट्टी के स्थान पर मोटी डोरी का भी प्रयोग किया जाता है और उसमें लोहे या पीतल के गोले छल्ले बायें को उतारने तथा चढ़ाने के लिए डाल दिए जाते हैं।

तबला मिलाने की विधि

दाहिना तबला अधिकतर मध्य सा या तार सप्तक के षड्ज (सा) में मिलाया जाता है। कभी-कभी पंचम (प) या मध्यम (म) में भी मिलाया जाता है। जिन रागों में पंचम का प्रयोग नहीं होता, उनके साथ तबला मध्यम में मिलाया जाता है। षड्ज में तबला मिलाना सुविधा और कर्णप्रियता दोनों ही दृष्टियों से उत्तम है।

तबला मिलाने अथवा स्वर ऊँचा या नीचा करने में गट्टों और गजरे की सहायता लेनी पड़ती है। मिलाने के पूर्व यह अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि जिस स्वर में हमारा तबला है और जिसमें मिलान है उसमें कितना अन्तर है, अधिक उतरा या चढ़ा है या कम अन्तर है। यदि दोनों स्वरों में अधिक अन्तर है और तबले को चढ़ाना है, तो हथौड़ी से गट्टों पर ऊपर से नीचे की ओर आघात करना चाहिए। इसके विपरीत यदि तबले को अधिक उतारना है, तो गट्टो को हथौड़ी से नीचे से ऊपर की ओर ठोकना चाहिए। स्वरों में कम अन्तर रहने पर हथौड़ी से गजरे पर आघात करके मिलाना चाहिए। जहां तक हो गजरे का कम प्रयोग करना चाहिए क्योंकि एक तो इससे पूड़ी शीघ्र खराब हो जाती है और दूसरे गजरे से मिलाया गया तबला शीघ्र बेसुरा भी हो जाता है। दाहिने तबले का मुंह जितना अधिक छोटा है वह उतने ऊँचे स्वर में मिलाया जा सकता है।

बांया तबला किसी विशेष स्वर में नहीं मिलाया जाता। आवश्यकता अनुसार हथौड़ी से गजरे पर आघात करके उतारा या चढ़ाया जाता है। कुछ लोग बायें में बद्धी के स्थान पर डोरी का प्रयोग करते हैं और जिसमें गोले छल्ले पहना देते हैं, उसका प्रयोग बायां उतारने और चढ़ाने में किया जाता है।

पखावज-पुष्कर-पक्षवाद्य-पखावज

प्राचीन शिल्पों में त्रिपुष्कर के दो रूप पाये जाते हैं-एक में तीन मृदंगों का एक साथ वादन देखा जाता है और दूसरे में एक ही वाद्य के अंतर्गत तीन मुख देखे जाते हैं। दक्षिण भारत के मंदिरों में तीन तथा पांच मुख वाले मृदंग की आकृतियां पाई जाती है। इन मुखों पर राग तथा मूर्छना के अनुकूल स्वर की स्थापना की जाती थी। इस क्रिया को 'मार्जना' कहा जाता था। इसके लिए नदी तट की चिकनी मिट्टी के साथ गेहूं अथवा जौ का चूर्ण मिलाया जाता था और इस मिश्रण का लेप वाद्य के मुंह पर लगाया जाता था।

अनुमान है कि पखावज का जन्म ईसा से कोई 500 वर्षों पूर्व हो चुका था। उपनिषदों तथा पुराणों में भी इसका उल्लेख मिलता है। उस समय मृदंग केवल मिट्टी का ही बनाया जाता था। इसलिये उसमें गटठे नहीं लगाए जाते थे। चढ़ाने के उतारने के लिए केवल बद्धियों को ढीला या कस दिया जाता था। भारत में यवनों के आगमन के बाद मृदंग का शरीर लकड़ी का बनाया जाने लगा और धीरे-धीरे करके उसको चढ़ाने या उतारने के लिये गटठों का प्रयोग किया जाने लगा।.

तेरहवीं शताब्दी तक भारत में यवन शासकों का पूर्ण रूप से अधिकार हो चुका था। यवन राज्य-काल में कई संगीत प्रेमी बादशाह हुये जिनसे ख़्याल अंग की गायकी का जन्म हुआ। मृदंग की संगति ध्रुपद-धमार जैसी गम्भीर और जोरदार गायकी के ही लिये उपयुक्त थी। धीरे-धीरे ख़्याल गायकी का प्रचार बढ़ने लगा और ध्रुपद-धमार की गायकी का प्रचार कम होने लगा। उसी के साथ ही साथ उसके जीवन साथी मृदंग का भी प्रचार कब होता चला गया। आज तो मुश्किल से कभी ध्रुपद सुनने का अवसर मिलता है और उसके साथ भी पखावज के स्थान पर तबले से ही काम निकाल लिया जाता है।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

9.1 चाँटी किस वाद्य यंत्र का अंग है?

1) सितार

2) हारमोनियम

3) तबला

4) कोई नहीं

9.2 लव किस वाद्य यंत्र का अंग है?

1) तबला

2) हारमोनियम

3) सितार

4) कोई नहीं

9.3 मैदान किस वाद्य यंत्र का अंग है?

1) हारमोनियम

2) तबला

3) सितार

4) कोई नहीं

9.4 पखावज वाद्य पर जो चिकनी मिट्टी या आते का लेप किया जाता है वो क्या कहलाता है?

1) लेप

2) पोहण

3) स्याही

4) कोई नहीं

9.5 तीन ताल कौन से वाद्य यंत्र पर बाजाया जाता है?

1) तबला

2) पखावज

3) हारमोनियम

4) कोई नहीं

9.6 चारताल कौन से वाद्य यंत्र पर बाजाया जाता है?

1) तबला

2) पखावज

3) हारमोनियम

4) कोई नहीं

9.4 शास्त्रीय संगीत और फिल्म संगीत

शास्त्रीय संगीत

"शास्त्रीय संगीत" वह है जिसमें गायन, वादन् और नृत्य के कुछ निर्धारित नियम होते हैं और जिनका पालन करने से ही वह संगीत, शास्त्रीय संगीत का रूप धारण करता है। इसमें जहां एक ओर राग के नियमों का पालन होता है वहीं ताल के बंधन में ही राग को गाया बजाया जाता है। "शास्त्रीय संगीत" नाम से संतुष्ट है कि यह एक कला है जिसका अपना एक निश्चित शास्त्र है। वह मौखिक एवं प्रदर्शनात्मक होते हुए भी एक विधा की भान्ति अध्ययन अध्यापन का विषय रहा है। सम्पूर्ण भारतीय विधाओं की भांति संगीत-विधा का उद्देश्य भी अध्येता में मौलिक सर्जन की क्षमता विकसित करना है।

"शास्त्रीय संगीत" नियमबद्ध हैं और प्राचीन सिद्धान्तों पर आवलम्बित है। कोई भी संगीतज्ञ क्यों न हो, वह संगीत सिद्धान्तों का परित्याग नहीं कर सकता। भारतीय शास्त्रीय संगीत में हिन्दू और मुसलमान गायक और वाक संगीत के प्राचीन नियमों और सिद्धान्तों का श्रद्धापूर्वक पालन करते हैं। हिन्दोस्तानी शास्त्रीय संगीत की सैद्धान्तिक मर्यादा और उसकी नियमबद्धता उसके दो अनिवार्य गुण है। इनके बिना हम संगीत, मुख्य रूप से शास्त्रीय संगीत की कल्पना भी नहीं कर सकतें।

सुगम संगीत को भाव संगीत, सरल संगीत, लाईट म्यूज़िक आदि भी कहा जाता है। सुगम संगीत, संगीत की ऐसी विधा है जो जनमानस द्वारा आसानी से ग्रहण की जा सकती है। यह एक ऐसी कला है जो एक मन व हृदय के छोर से उपजती है तो दूसरे का अंत-स्थल इसका छोर पकड़ कर इसके अंकुरण को सींच देता है। दुनिया का मानव चाहे गोरा हो या

काला इसकी कोंपल की कोमलता को महसूस करता है। इसकी मुलायम पंखुड़ी जब दर्द की एक बूंद ओस से लरजती है।

तो संगीत के बोल थरथरा जाते हैं और गाने वालों या सुनने वाले की आंखों में शबनमी नमी भर देते हैं। अपनी विशेषताओं के कारण सुगम संगीत गन्धर्व बाणी या देवताओं की भाषा की श्रेणी में आता है। यह आसान भाषा है तभी तो बिना किसी शिक्षण व प्रशिक्षण के समझी जा सकती है इसलिए यह सुगम भी है। इसके प्रचलन में गीत, भाव-गीत, नाट्य गीत, भजन, ग़ज़ल और कव्वाली आदि शैलियां आती है। आधुनिक प्रचलन में सिने संगीत भी सुगम संगीत पद्धति के अन्तर्गत आता है। सुगम संगीत आसान है व सहज ग्राहय है इसीलिए यह अधिक लोकप्रिय भी है।

फिल्म संगीत

जब तक बोलती फिल्मों का आविष्कार नहीं हुआ था तब तक पर्दे के नीचे या कहीं एक ओर बैठकर एक व्यक्ति साक्षात् रूप से कथा को बताता रहता था और संगीतकार दृश्य देखकर उसके अनुरूप अपनी समझ से हारमोनियम, तबला व बांसुरी जैसे वाद्यों से वादन करते थे। लेकिन जब सवाक् फिल्मों की शुरूआत हुई तो दृश्य में अभिनय करने वाले गायक या नर्तक के साथ पास की झाड़ी में छिपकर संगीतकारों को वादन करना पड़ता था। बाद में जब सवाक् फिल्में बनने लगीं तो 'प्लेबैक' सिंगिंग (पाश्वगायन) की कला ने जन्म लिया अर्थात् गायन किसी का और उस पर होंठ चलाकर प्रस्तुत करने वाला कोई दूसरा। विज्ञान की कृपा से आज फिल्म का संगीत एक सशक्त कला के रूप में हमारे सामने आया है जिनमें टीम वर्क अर्थात सामूहिक सहयोग की प्रधानता रहती है।

सर्वप्रथम फिल्म में प्रयुक्त गीतों की संख्या इस प्रकार तय की जाती है कि सभी गीतों के रिकार्ड बन सके। यदि फिल्म कथानक प्रधान या प्रयोगवादी किस्म की है तो तब रिकार्ड बनाने की चिन्ता नहीं होती। गीतों की संख्या निश्चित होने पर प्रत्येक गीत की स्थिति संगीत निर्देशक ध्यान से समझता है और उनके अनुसार धुन तैयार करता है। धुन के छद के अनुसार गीतकार या कवि अनुकूल भावों को प्रदर्शित करने वाले गीत या काव्य की रचना करता है। उसे ध्यान रखना होता है कि गीत शब्द प्रधान कम संगीत या स्वरप्रधान अधिक हो। फिल्म में गीतकार सदैव संगीत निर्देशक के अधीन रहकर ही कार्य करता है। ऐसा बहुत कम होता है कि जब किसी बने बनाए अच्छे साहित्यिक गीत पर संगीत निर्देशक को ऐसी धुन सूझ जाए जो दृश्य या पात्रों की हलचल के अनुकूल सिद्ध हो। इसीलिए फिल्मी गीतों का साहित्यिक

मूल्यांकन कम होता है, सांगीतिक मूल्यांकन अधिक। गीत की पहली पंक्ति या मुखड़ा प्रभावशाली और जुबान पर जल्दी चढ़ने वाली होनी चाहिए।

अन्त में यह कहना अनुचित नहीं होगा कि संगीत की प्रत्येक विधा मूल रूप से शास्त्रीय संगीत पर ही आधारित है। फिल्म संगीत वर्तमान में सम्पूर्ण भारत में सबसे अधिक सुना जाने वाला संगीत है। परन्तु यह संगीत भी शास्त्रीय संगीत से बाहर नहीं है। प्रत्येक गीत किसी न किसी राग में बंन्धा हुआ होता है। इसलिए शास्त्रीय संगीत को सही तरीके से सिखने वाला व किसी उचित गुरू से शिक्षा प्राप्त करने वाला व्यक्ति संगीत की किसी भी विधा में पारंगत हो सकता है।

9.5 सारांश

भारतीय शास्त्रीय संगीत मे प्रयुक्त अवनद्ध वाद्य यंत्रों की आधारभूत जानकारी (तबला और पखावज) परिचय और शास्त्रीय संगीत और फिल्मी संगीत विषय भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक महत्वपूर्ण विषय है, जिसके बिना अच्छे संगीत की कल्पना भी नहीं की जा सकती। अवनद्ध वाद्य पर निरंतर अभ्यास से शास्त्रीय संगीत मे तैयारी और परिपक्क्वता आती है, जो श्रोताओं को अनायास ही मंत्रमुग्ध करती हैं। शास्त्रीय संगीत मे तंत्री वाद्य पर अभ्यास से संगीतज्ञ के वादन मे रंजकता और परिपक्क्वता आती है। शास्त्रीय संगीत और फिल्मी संगीत के अध्ययन से इन दोनों शैलियों मे अंतर पहचानने मे विद्यार्थी सक्षम हो सकेगा।

9.6 शब्दावली

- अलंकार (Alankar): जिस प्रकार एक स्त्री सुन्दर दिखने के लिए आभूषणों से खुद को सजाती है वही स्थान संगीत मे अलंकार का है।
- राग (Raga): संगीत का एक विशेष संरचनात्मक पद्धति, जो स्वरों के विशेष क्रम का उपयोग करके भावनात्मक और मनोरंजन को व्यक्त करता है।
- ताल (Taal): संगीत में अंकित समय स्तर को ताल कहा जाता है, जो गायन या वादन के साथ समय की गणना करने में मदद करता है।
- लय (Lay): संगीत में गति या चलन को लय कहा जाता है, जो ताल की गति को निर्दिष्ट करता है।

- रागिनी (Ragini): रागों की सहायक संगीत पद्धति जिसमें संगीत रागों के विभिन्न अनुभवों और भावों को व्यक्त करने के लिए मेलोडी और ताल का उपयोग किया जाता है।
- श्रुति (Shruti): संगीत में सबसे छोटे स्वर को श्रुति कहा जाता है, जो स्वर स्थान पर किसी भी विस्तार में पाया जा सकता है।
- स्वर (Swar): संगीत में विभिन्न ऊर्जाओं को स्थान देने वाले तारों को स्वर कहा जाता है, जो संगीत के मूल भाग हैं।
- मेलोडी (Melody): संगीत में स्वरों के विशेष क्रम का एक संरचित और आकर्षक संयोजन, जिससे एक गाना या संगीत कविता का निर्माण होता है।
- ज्वारी (jwari): सितार का एक ऐसा हिस्सा जिसके ऊपर से होते हुए सभी तारें खूँटियों से लंगोट की तरफ जाती हैं, और ज्वारी से ही सितार की आवाज अपने मन के अनुसार कारीगर द्वारा बनवाई या रिपेयर की जाती है।

9.7 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

आत्म-मूल्यांकन प्रश्न 1

9.1) उत्तर: 3

9.2) उत्तर: 1

9.3) उत्तर: 2

9.4) उत्तर: 2

9.5) उत्तर: 1

9.6) उत्तर: 2

9.8 संदर्भ

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). कर्मिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2010). राग परिचय (भाग 4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

प्रो. केशव शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

डॉ. निर्मल सिंह द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

9.9 अनुशंसित पठन

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 2), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (1998). मधुर स्वरलिपि संग्रह. संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

9.10 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. भारतीय शास्त्रीय संगीत मे प्रयुक्त अवनद्ध वाद्य यंत्रों की आधारभूत जानकारी (तबला और पखावज) विषय पर विस्तार से प्रकाश डालें।

प्रश्न 2 भारतीय शास्त्रीय संगीत मे प्रयुक्त अवनद्ध वाद्य यंत्रों की आधारभूत जानकारी (तबला और पखावज) पर अवनद्ध वाद्यों के प्रकारों सहित विस्तार से प्रकाश डालें।

प्रश्न 3 शास्त्रीय संगीत और फिल्मी संगीत विषय पर विस्तार से प्रकाश डालें।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न- कार्यभार

प्रश्न 1. वर्ण और वर्ण का अर्थ एवं परिभाषा विस्तार सहित लिखिए।

प्रश्न 2. काकु और ठुमरी का अर्थ एवं परिभाषा विस्तार सहित लिखिए।

प्रश्न 3. एकताल और चौताल का परिचय एवं तीन ताल की एकगुण और दुगुण लिखिए।

प्रश्न 4. दीपचंदी और धमार ताल का परिचय एवं तीन ताल की एकगुण और दुगुण लिखिए।

प्रश्न 5. त्रिवट, दादरा चतुरंग और निबद्ध गान और अनिबद्ध गान का अर्थ परिभाषा विस्तार सहित लिखें।

प्रश्न 6. थाट और स्थाय का अर्थ और थाट के प्रकारों का विस्तार से वर्णन करें।

प्रश्न 7. घराना का अर्थ तथा सितार और गायन के विभिन घरानों का विस्तार से वर्णन करें।

प्रश्न 8. कुतुप(वाद्यवृंद), प्रबंध और संगीत तथा सौंदर्यशास्त्र इन तीनों का विस्तार से वर्णन करें।

प्रश्न 9. भारतीय शास्त्रीय संगीत मे प्रयुक्त अवनद्ध वाद्य यंत्रों की आधारभूत जानकारी (तबला और पखावज) विषय पर विस्तार से वर्णन करें।

प्रश्न 10. शास्त्रीय संगीत और फिल्मी संगीत विषय पर विस्तार से प्रकाश डालें।